जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२५ अंक -03 नवंबर २०२२ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ४० मूल्य - १५० रूपए प्रति

ना हम दिगम्बर हम सब जैन हैं ना हम श्वेताम्बर

भारत के इतिहास में प्रथम बार
Supreme Court के 100 Advocates
एक साथ-एक मंच पर चर्चा करेंगे - भारत को केवल 'भारत' ही बोलें INDIA नहीं।
भारतीय संविधान के अनुच्छेद क्रमांक १ में
'India, that is Bharat' में होगा बदलाव।
याचिका भेजेंगे भारत सरकार को ताकि भारत को केवल 'भारत' ही बोला जा सके।

Hon'ble Speaker

Pravin H. Parekh
Sr. Advocate
Supreme Court Of India

Keynote Speaker

Bijay Kumar Jain
National President
Main Bharat Hun Foundation

Wednesday 16th Nov 2022
04.00 PM to 07.00 PM

Venue:
The Indian Society of International Law, (ISIL)
V.K. Menon Bhawan, 9, Bhagwan Das Marg, Delhi, Bharat-110001

With Best Compliments
K. Subhashchand Ranka
Managing Partner
Mob: 9384602854
SUBHASH AUTO ENTERPRISES
Distributing Quality Components Since 1966
Off: BR Complex, 27 & 28, Woods Road, Mount Road, Chennai, Tamil Nadu, Bharat-600002
Ph: 28603021/42027400/45540144 Res: 28112854 Email: contact@subashauto.com

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

www.jinagam.co.in Remove INDIA Name From the Constitution INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

॥ श्री आदिनाथाय नमः ॥ ॥ श्री राजेन्द्रसूरी गुरुदेवाय नमः ॥

श्री शत्रुंजयावतार
श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ

भगवान श्री महावीरस्वामी निर्वाण पर्व एवं
गणधरश्री गौतमस्वामी केवलज्ञान पर्व महोत्सव

हार्दिक
आमंत्रण

संवत 2079 कार्तीक सुदी-1 दिनांक 26-10-2022 से
कार्तीक सुदी-5 दिनांक 29-10-2022 तक

♦ आशीर्वाद प्रदाता ♦

प.पू.गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद्विजय श्रीऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

♦ पावनकारी शुभनिश्रा ♦

प.पू. मुनिराज श्री जीतचन्द्रविजयजी म.सा. एवं

प.पू.सा.श्री किरणप्रभाश्रीजी म.सा, प.पू.सा.श्री सद्गुणाश्रीजी म.सा., प.पू.सा.श्री सुमंगलाश्रीजी म.सा.,
प.पू.सा.श्री विमलयशाश्रीजी म.सा., प.पू.सा.श्री प्रमितगुणाश्रीजी म.सा., प.पू.सा.श्री विनयदर्शिताश्रीजी म.सा.,
प.पू.सा.श्री मनिषरसाश्रीजी म.सा., प.पू.सा.श्री हर्षवर्धनाश्रीजी म.सा., प.पू.सा.श्री कीर्तिवर्धनाश्रीजी म.सा.,
प.पू.सा.श्री हर्षितगुणाश्रीजी म.सा.आदिठाणा

पू.पिताश्री
स्व. श्री धनराजजी

पू.मातुश्री
स्व. कमलाबेन

धुम्बडिया (राज.) निवासी शा. बाबुलालजी धनराजजी डोडीया गाँधी परिवार
श्रीमती सुशीलाबेन बाबुलालजी डोडीया गाँधी
पुत्र-पुत्रवधु : जयंत-ममता, शैलेष-मंदाकिनी पौत्र-पौत्री : कुशी, कियाश, झील, क्रिश
बेटा-पोता : धनराजजी हरजीजी डोडीया गाँधी परिवार

आयोजक : श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर पेढ़ी (ट्रस्ट)
श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ, राजगढ-धार (म.प्र.)

!! जय भारत !! !! जय भारत !! !! जय भारत !!

अंतर्राष्ट्रीय संगठन
मैं भारत हूँ फाउंडेशन
के साथ समस्त भारतीयों का एकमात्र उद्देश्य

- भारत के हर तन पर हो कपड़ा
- भारत के हर पेट में हो रोटी
- भारत के हर भारतीय को मिले शिक्षा
- भारत के हर घर में हो हरियाली
- भारत का हर घर बचाए जल (पानी)
- भारत का हर गॉव हो शक्तिशाली
- भारत की एक हो राष्ट्रभाषा

आप भी सहयोगी बन सकते हैं

आप भी सहयोगी बन सकते हैं

भारतीय छात्रों को लिखने के लिए नोट बुक दी जा रही है भेंट स्वरूप

64 Pages

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
द्वारा
Long Note Book

करें अर्थिक सहयोग

ONLINE DONATION ACCEPTED

A/C Name	: MAIN BHARAT HUN FOUNDATION
Bank	: HDFC
A/C No.	: 50100479479181
IFSC	: HDFC0000592
BRANCH	: MAROL, ANDHERI (E)

सहयोग स्वरूप दी गयी राशी भारतीय आयकर अधिनियम **80G** व **12A** के अनुसार मान्य की जाएगी।

राष्ट्रीय कार्यालय : बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400059
फोन : 022-28509999 mainbharathunfoundation@gmail.com,
www.mainbharathun.co.in

◆ कोलकाता कार्यालय ◆
ऑफिस नं. 77, सदासुख कटरा, दूसरा तल्ला,
201/बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, भारत-700007 फोन : 033-48039531

◆ दिल्ली कार्यालय ◆
U-74, शॉप नं. 17, तिरूपती बिल्डींग, गणेश कचोरी के पास, विकास मार्ग, शकरपुर, लक्ष्मी नगर मेट्रो स्टेशन गेट नं. 2 के पास, दिल्ली, भारत-110092 फोनः 011-41556214

!! जय भारत !! !! जय भारत !! !! जय भारत !!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

अगला अंक

जैन एकता

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

BASANTILAL SANCHETI JAIN
Mob. 098199 76662

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

'जैन एकता' से ही जैन समाज का विकास व सम्मान बढ़ेगा मिल कर कहें हम-सब जैन हैं

Prathmesh Gold

Specialist in Bangles

204, Golden Plaza, 2nd Floor, 93/95, Dhanji Street, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400 003
Tel.: +91-22-23468222 / 61832199 / 49117305 / 33527305
E-mail: prathmeshgold92@gmail.com

करते हैं प्रीत भारत से!
कहेंगे देश को केवल भारत
आप भी बोलें 'भारत' को केवल BHARAT

इंजी. कैलाश चन्द्र जैन
महासचिव- बुन्देलखण्ड सांस्कृतिक एवं सामाजिक सहयोग परिषद, लखनऊ
कोषाध्यक्ष- भारत विकास परिषद, परमहंस शाखा, लखनऊ
कार्यकारिणी सदस्य- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, इंदिरा नगर, लखनऊ
सदस्य- भारतीय जैन मिलन (साकेत) लखनऊ
भ्रमणध्वनी - ९४१५४७०१४६
निवासः ९/३३६, इन्दिरा नगर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत -२२६०१६

!!जय भारत!! भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101 !!जय भारत!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए'

Remove INDIA From Constitution

!!भारत माता की जय!! भारतीय संविधान से INDIA हटाया जाए !!भारत माता की जय!!

बिजय कुमार जैन - भ्रमणध्वनिः ९३२२३०७९०८

FREE HOME DELIVERY

NAKODA®

Pure Ghee, Edible Oils & More...

89288 82457
85915 62269
89285 86181
91377 56585

ORDER NOW @
www.nakodagheetel.com

DAIRY SPECIAL Desi Ghee

Refined **SUNFLOWER OIL**

Refined **RICE BRAN OIL**

Filtered **GROUNDNUT OIL**

MUSTARD OIL Kacchi Ghani

Refined **GROUNDNUT OIL**

SESAME OIL

Refined **SOYABEAN OIL**

DAIRY TAAZA Cow's Desi Ghee

क्या आपने सर्दियों की तैयारी कर ली?

आज ही ऑर्डर करें नाकोड़ा घी और तेल!

NAKODA TRUSTED QUALITY OVER 45 YEARS

M/s. KEWALCHAND VINODKUMAR

K. B. PRODUCTS PVT. LTD.

Customer Care: 098194 75175 | Website: www.gheetel.com | Email: info@gheetel.com

/nakodagheetel.com

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

२५ वें वर्ष में प्रवेश

वर्ष -२५, अंक ३, नवंबर २०२२

जिनागम

१२ अंकों का वार्षिक मूल्य रू.२१००/-

सम्पादक - बिजय कुमार जैन

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

❍ 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/ समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।

❍ 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-२८५० ९९९९
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com

अन्तरताना:- http//www.jinagam.co.in

कृपया विज्ञापन बिल की राशि का भुगतान
नीचे दिये गए बैंक में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

श्वेताम्बर दिगम्बर ० सम्पादकीय ० दिगम्बर श्वेताम्बर

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मैं भारत हूँ फाउंडेशन द्वारा ऐतिहासिक कार्यक्रम आयोजन

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं अभियान की सफलता के लिए भारत की राजधानी दिल्ली के सुप्रीम कोर्ट के प्रांगण में 16 नवंबर 2022 को एक ऐतिहासिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम में सुप्रीम कोर्ट के 100 वकील उपस्थित होकर भारतीय संविधान के अनुच्छेद 1 में लिखा गया **INDIA THAT IS BHARAT** में कानूनन संशोधन कर भारत सरकार को याचिका समर्पित करेंगे ताकि भारत सरकार गंभिरता से विचार करेगी और 135 करोड़ भारतीयों का देश विश्व में केवल 'भारत' के नाम से ही पहचाना जा सकेगा, माँ भारती विश्व को कह सकेगी कि 'मैं भारत हूँ'।

मित्रों! विश्व के किसी भी राष्ट्र के नाम 2 नहीं है, हम इंसानों के नाम भी 2 नहीं होते तो हमारे देश के 2 नाम क्यों?

INDIA और भारत, जबकि हम सभी जानते भी हैं कि भारत का इतिहास अति पुराना है, जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ के ज्येष्ठ पुत्र भरत चक्रवर्ती के नाम से हमारे देश का नाम 'भारत' पड़ा था, 'भारत' नाम में ही आन-बान और शान है, इसलिए आज हम सभी भारतीय चाहते हैं कि हमारे देश का नाम एक ही रहे केवल 'भारत'!

मुझे पूरा विश्वास है कि आयोजित 16 नवंबर के कार्यक्रम में हमारे संविधान के ज्ञाता सर्वोच्च अदालत के अधिवक्ता जरूर कुछ ना कुछ निष्कर्ष निकालेंगे जो कि कानून के अनुरूप होगा।

आप सभी से भी निवेदन है कि हम सभी अपने अभिवादन में जब 'जय जिनेंद्र' बोलते हैं तो उसके साथ 'जय भारत' भी बोलें।

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

पूर्ण राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि और भाषा

आपका अपना
जैन एकता का सिपाही
बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान
भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

दिनांक ९ नवंबर २०२२ को दिल्ली स्थित केएलजे हाउस में १६ नवंबर २०२२ को भारत की सर्वोच्च अदालत के प्रांगण आईएसआईएल हॉल में १०० अधिवक्ताओं के साथ आयोजित होने वाले कार्यक्रम में उपस्थिति के लिए जैन समाज की विशिष्ठ विभूति के. एल. जैन (उद्योगपति व समाजसेवी) को आमंत्रित करते हुए 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष निशा लड्ढा व सर्वोच्च न्यायालय की अधिवक्ता श्रीमती जया राखेचा।

भारत को केवल BHARAT ही बोलें INDIA नहीं
बुधवार १६ नवंबर २०२२
दिल्ली के सर्वोच्च अदालत में आयोजित कार्यक्रम
की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं
जय भारत! जय भारत! जय भारत!

DR. D.R. MEHTA
Founder & Chief Patron
PRAKRIT BHARTI ACADEMY

* धार्मिक, आध्यात्मिक, साहित्यिक एवं बालोपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन
* पुस्तकालय एवं वाचनालय

13, Main Road, Malviya Nagar,
Jaipur, Rajasthan-302017
दूरध्वनि: 0141-2524827, 2520230
भ्रमणध्वनि .: 09314566665
अणुडाकः prabharati@gmail.com

भारत को केवल BHARAT ही बोलें INDIA नहीं
बुधवार १६ नवंबर २०२२ दिल्ली के सर्वोच्च अदालत में आयोजित
कार्यक्रम की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं
जय भारत! जय भारत! जय भारत!

Amit Jain
Mob: 93394 60711

New Prince Eyecare

237a, Diamond Harbour Rd, Behala Thana,
Near Great Eastern Electronic Store, Behala,
Kolkata, West Bengal, Bharat -700034
Ph: 7003525811 / 8444007722

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

श्री १००८ भगवान आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र रानीला

परमपूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानन्द पूज्य ऐलाचार्य जी श्री श्रुतसागर जी हरियाणा प्रान्त के गुडगांवा, रोहतक, भिवानी व हिसार के क्षेत्र हजारों वर्ष पूर्व से जैन संस्कृति से प्रभावित रहे हैं। जैनागमों में यह उल्लेख भी मिलता है कि भगवान महावीर दक्षिण से विहार करते हुए इन क्षेत्रों से होकर ही उत्तर की ओर गए थे। हिन्दी लेखक वासुदेव शरण अग्रवाल ने आज के हिसार नगर का नाम उस युग में ईषुकार नगर बताया है।

गत पांच-छ: दशक में इन क्षेत्रों में भूगर्भ से प्राप्त शिलालेख एवं तीर्थंकरों की मूर्तियां समय-समय पर प्रकट होना जैन संस्कृति का प्रमाण है। सरकारी दस्तावेजों के अनुसार प्राचीन काल में यह क्षेत्र जैन राजपूतों का क्षेत्र माना गया है तथा जैनाचार्यों के अनुसार इस क्षेत्र में सम्राट हर्षवर्द्धन के समय जैन मन्दिरों का निर्माण हुआ, इसलिए भी यह क्षेत्र उस युग में जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र था।

कालचक्र के प्रभाव से व मुगल शासकों के दमनकारी प्रवृत्ति के कारण जैन धर्मावलम्बियों ने अपने आराध्य देवताओं व तीर्थंकरों की मूर्तियां विभिन्न स्थानों पर भूगर्भ में रख दी, ताकि आतंकताईयों के हाथों नष्ट न होने पाएं और सुरक्षित रहें ऐसा इतिहासकारों का मानना है। इस श्रृंखला में भिवानी जिले के अन्तर्गत तहसील चरखी दादरी के जाट बाहुल्य गांव 'रानीला' में जहां जैन परिवार का एक भी घर नहीं था। अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को दशहरा पर्व के शुभ दिवस पर १८ अक्तूबर १९९१ को अतिशय हुआ। गांव रानीला का रणजीत नाम का एक जाट किसान जब खेत में कस्सी से काम कर रहा था कि टीले की रेत में किसी कठोर वस्तु के दबे होने का उसे एहसास हुआ। सहसा ही उसके हाथ कांपने लगे, रणजीत ने अपने हाथों से कस्सी को छोड़कर रेत को कुरेदना प्रारम्भ किया ही था कि कुछ ही क्षणों में उसे एक सुन्दर पाषाण शिला दिखाई दी। शिला बाहर निकाली गई। वास्तव में यह शिला न होकर आद्यप्रणेता युग पुरूष तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की प्रतिमा थी, परन्तु रणजीत को इस बात का ज्ञान न था। चंदन रंग की मनोहारी 28"x18" की भव्य इस शिला पर प्रथम तीर्थंकर १००८ आदिनाथ की अतिशय युक्त प्रतिमा तथा शिला के तीनों ओर अन्य तेइस तीर्थंकरों की अष्ट प्रतिहार्य एवं यक्ष-यक्षिणी सहित उत्कीर्ण तथा साथ ही माता चक्रेश्वरी देवी की अति सुन्दर कला युक्त प्रतिमा भी वहां से प्राप्त हुई।

प्रतिमा के चुम्बकीय प्रभाव से श्रद्धालु रानीला की ओर खिंचते चले गए। मनोकामनाएं पूरी होने लगी। जैन तथा अजैन सभी श्रद्धालु इस क्षेत्र से जुड़ते चले गए। फलस्वरूप इस निर्जन क्षेत्र का विकास होने लगा तथा कम समय में ही यहाँ एक विशाल भव्य त्रिकूट जिनालय का निर्माण हो गया।

धर्मानुरागी सुश्रावक सेठ बिशनस्वरूप जैन रोहतक के परिजनों द्वारा प्रदत्त भूमि पर पूज्य सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य श्री १०८ मुनिराज विद्यानन्द जी महाराज के पावन सानिध्य में ५ मई १९९२ को तत्कालीन जैन समाज के

शीर्षस्थ नेता साहू अशोक कुमार जी के कर कमलों द्वारा क्षेत्र परिसर का शिलान्यास सम्पन्न हुआ। नवनिर्मित भव्य त्रिकूट जिनालय में भगवान की प्रतिमा को विधिवत विराजमान करने हेतु २३ फरवरी से १ मार्च २००७ तक भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव परम पूज्य राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से पूज्य ऐलाचार्य मुनि श्री १०८ श्रुतसागर जी महाराज एवं पूज्य श्री १०५ आर्यिका **शेष पृष्ठ ९ पर...**

पृष्ठ ८ से... स्वस्ति भूषण जी के सानिध्य में बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

इस भवन में जिनालय के प्रथम तल पर भव्य समवशरण व नीचे के तल पर विशाल सभागार है। ऊपर के तल पर समवशरण के साथ पश्चिम की ओर माता चक्रेश्वरी का मन्दिर तथा पूर्व की ओर चरण स्थल का निर्माण किया गया है। 'रानीला' का यह भव्य मन्दिर भारतवर्ष में कला, सुन्दरता एवं आधुनिकता की दृष्टि से अनूठा, आकर्षक व प्रभावशाली है। भगवान की चमत्कारी प्रतिमा प्रकट होने से 'रानीला' गांव में ज्योति का संचार हुआ है तथा क्षेत्र में चमत्कारों का प्रभाव समय-समय पर देखने को मिलता रहता है। इस क्षेत्र का पानी पहले खारा होने के कारण पीने योग्य न था परन्तु तीर्थंकर के अतिशय से यहाँ एक भाग में मीठे पानी का स्त्रोत निकल आया। इसी प्रकार भक्तिभाव से श्रद्धापूर्वक दर्शन करने वालों की मनोकामनाएँ पूर्ण होने की भी अनेक घटनाएं प्रकाश में आई है। रणजीत नाम का किसान जिसके हाथों प्रतिमा प्रकट हुई, ने जैन धर्म के सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाने का संकल्प ले लिया। पूज्य श्री १०५ आर्यिका रत्न सृष्टि भूषण माता जी जब तनमय होकर भक्तामर का पाठ कर रही थीं, अनायास ही उनके हाथों में पवित्र गंदोदक आ गया, यह देख वहाँ उपस्थित सभी श्रद्धालु गदगद् होकर जय-जयकार करने लगे।

'रानीला' क्षेत्र में समय-समय पर जैन संत, मुनि, आर्यिकाएं, ऐलक, क्षुल्लक संघ सहित आते रहते हैं, इसके अतिरिक्त राजनेता, मन्त्री, उच्चन्यायालय के न्यायाधीश, मुख्य न्यायाधीश आदि महानुभाव दर्शनार्थ आते रहे हैं। समय-समय पर धार्मिक आयोजनों के अतिरिक्त स्वास्थ्य जांच शिविर, विकलांग शिविर, नेत्रों के आप्रेशन हेतु भी शिविर लगाए जाते हैं। अतिशय क्षेत्र पर प्रत्येक वर्ष २ अक्तूबर को वार्षिक मेला एवं रथ यात्रा का भव्य आयोजन किया जाता है, जिसमें हजारों की संख्या में देश-विदेश से श्रद्धालु दर्शनार्थ आकर भाग लेते हैं। वृद्ध व असहाय व्यक्तियों के लिए एक सुंदर रैम्प भी बना है जो चिकित्सालय के रूप में स्थापित है।

हरियाणा सरकार ने अतिशय क्षेत्र के वार्षिक उत्सव के अवसर पर गांव रानीला को आदर्श गांव बनाए जाने की घोषणा की, इससे गांव का चहुंमुखी विकास होगा, इस समय मन्दिर परिसर में ७५ कमरे, सभी आवश्यक सुविधाओं सहित तथा आधुनिक भोजनालय का निर्माण हो चुका है। दर्शनार्थी बन्धुओं के ठहरने का समुचित प्रबन्ध है।

गांव 'रानीला' हरियाणा प्रान्त के जिला भिवानी की तहसील चरखी दादरी के अन्तर्गत है तथा क्षेत्र पक्की सड़क से जुड़ा हुआ है। देहली से ११० कि.मी. तथा रोहतक से ४४ कि.मी. वाया रोहतक, रोहतक भिवानी मार्ग पर कलानौर, खेरड़ी मोड़, बौंद व सांजरवास होते हुए रानीला पहुंचा जा सकता है। राजस्थान से वाया रेवाड़ी-झज्जर व अचीना मोड़ से या नारनौल, महेन्द्रगढ़, चरखीदादरी होते हुए तथा हिसार से १०५ कि.मी., हांसी-बुवानीखेड़ा-भिवानी होते हुए भिवानी-रोहतक मार्ग पर खेरड़ी-मोड़ से बौंद होते हुए 'रानीला' पहुंचा जा सकता है।

जय भारत! जय भारत! जय भारत!

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

जैन एकता' से ही जैन समाज का विकास व सम्मान बढ़ेगा मिल कर कहें हम-सब जैन हैं

Sunil Jain

Mob: 9864818287

Marble House

Simlaguri, Barpeta Road,
Assam, Bharat-781315

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

भारत को केवल BHARAT ही बोलें INDIA नहीं
बुधवार १६ नवंबर २०२२
दिल्ली के सर्वोच्च अदालत में आयोजित कार्यक्रम
की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं
जय भारत! जय भारत! जय भारत!

जैन एकता' से ही जैन समाज का विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं

KJ

Lalesh Kumar Abishek kankariya

FINANCIER

Mob: 94440 70250 Mob: 99403 22880

Ram Lakhan Chamber, Suit No. 201&202,
2nd Floor, 19 & 20, General Muthia Street,
Sowcarpet, Chennai, Tamil Nadu- 600079
Ph : 044-25396707

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

अविनाश सुकंडे, राजेश मुनोत, सायंप्रभा महाराज राजाराम देशमुख (सिद्धिविनायक मंदिर ट्रस्टी, मुंबई) द्वारा कोकिला झवेरी को भारत भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए'

अणुव्रत लेखक पुरस्कार से नवाजा गया डॉ. कुसुम लुनिया को

छापर, राजस्थान : अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के राष्ट्रीय अणुव्रत अधिवेशन में पुरस्कार एवं सम्मान समारोह के दौरान छापर राजस्थान में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अपने प्रवचन में फरमाया कि 'अणुव्रत जीवन विज्ञान के पुरस्कार व सम्मान अणुव्रत सेवा में संलग्न व्यक्ति का मूल्यांकन होता है तथा दूसरों के लिए प्रेरणा भी होता है। लेखन के क्षेत्र में प्रतिभा के द्वारा साहित्य सृजन से नैतिक मूल्यों के प्रसार की सम्भावनाएं बनती है। खूब गहराई में जाकर चिन्तन मंथन पूर्वक लिखना उत्तम सेवा कार्य है। अणुव्रत नैतिकता प्रसार में योगदान ही मानवता की सेवा है।'

अपनी लेखनी से अणुव्रत दर्शन के प्रसार में अनुकरणीय योगदान प्रदान करने हेतु डॉ. कुसुम लुनिया (दिल्ली) को अणुव्रत लेखक पुरस्कार २०२२ से नवाजा गया। पुरस्कार के अंतर्गत इक्यावन हजार का चेक, स्मृति चिह्न और प्रशस्ति पत्र अणुविभा के मुख्यन्यासी तेजकरण सुराणा, अध्यक्ष अविनाश नाहर व निवर्तमान अध्यक्ष संचय जैन ने प्रदान किया,जिसे डॉ. कुसुम ने डॉ. धनपत एवं पारिवारिकजन के साथ ग्रहण किया।

इसी दौरान २०२२ का अणुव्रत पुरस्कार डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम को (मरणोपरान्त पुरस्कार प्राप्तकर्ता शेख सलीम पौत्र) , अणुव्रत गौरव २०२१ निर्मल रांका-कोयम्बटूर, अणुव्रत गौरव २०२२ डॉ. बसन्ती लाल बाबेल -लावासरदारगढ, जीवन विज्ञान पुरस्कार २०२१ श्रीमूलचन्द नाहर बेंगलुरू, २०२२ श्रीमती माला कातरेला-चैन्नई को प्रदान किये गये।

देश विदेश में पूर्णतया निःशुल्क सेवा

संबंधों का विशाल भंडार

विश्वस्तरीय ओसवाल, दिगम्बर जैन, श्वेतांबर जैन, मंदिर मार्गी, स्थानकवासी,
तेरापंथी, पल्लीवाल, पोरवाल, गोड़वाड़, 48 पट्टी, मीनमाल एवं
सांचौर के 8 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्ते करवाने का गौरवशाली कीर्तिमान स्थापित

प्रोफेशनल्स, सी.ए., पायलट, इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, आरएएस, एमबीए, फिल्म, बिजनेसमेन, उच्च शिक्षित एवं राजनैतिक क्षेत्र के अलावा हर वर्ग और क्षेत्र में कार्यरत युवा-युवतियों के लिए जांचे परखे वैवाहिक रिश्तों का खजाना, 1 जून 2000 से सतत आपकी सेवा में तत्पर

जैन वैवाहिक रिश्तों का आखिरी पड़ाव

GJVO

उच्च एवं मध्यम
वर्गीय परिवारों का काम
हमारी खास विशेषता

दुआओं के मंडप में बैठे
रिश्तों के बेताज बादशाह
- पदमचंद जैन

एक छत के नीचे
उपलब्ध सेवाएं

वैवाहिक- रोजगार, छात्रवृति,
विधवा पेंशन, मेडिकल हेल्प प्रशासनिक
एवं कानूनी सलाह, धार्मिक एवं
सामाजिक क्षेत्र में सदैव
अग्रणी सहयोगी

अच्छे संबंधों के लिए
संपर्क करें - मैं हु ना

समस्त जैन समाज के
उत्कृष्ट वैवाहिक संबंधों
का किर्तिमान

Chairman
Oswal Matrimonial International Jain &
Vaish World famous Marriage Consultant

Founder Chief Parton (FCP)
Jain International TRADE Organisation (JITO)
(C.M.D.) - Manidhari Jain Jewellers

Former Officer Bearer

All India Vice President
Vaishya Maha Sammelan

Member Carpart
Rural Development Ministry of India

Member
Monitoring Vigilence Committee (RAJ)

Member
Mahaveer International

Life Member
Cancer Relief Society, Jaipur

Executive Member
Rajasthan Chamber of Commerce & Industries

Life Member
Bharat Jain Mahamandal
(Kharter Gachha Maha Sangh)

Ex - President
Lions Club Jaipur Diamond

Member
Jain Social Group

Member - JCF

ग्लोबल जैन एवं वैश्य ऑर्गनाइजेशन

1662-B, A. P. Apartment, Motidungari Road, Jaipur-04, Tel. 0141-2602626
+91- 9314510196, +91-96026 23456
+91-7891000449, +91-7891000336, +91-7891029994, +91-7891029993
Email : neerapadamjain@gmail.com, jivo@live.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

महान शासन प्रभावक, चारित्र-चूड़ामणि, तपस्वी सम्राट आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरि जी म. ने जैन धर्म की प्रतिष्ठा बढायी थी

आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरि जी म., के साथ
जिनशासनरत्न आचार्य श्रीमद विजय समुद्र सूरीश्वर जी म. सा. एवम
मुनि श्री जय विजय जी महाराज के साथ सुश्रावक श्री कोमल कुमार जैन

पग-पग पर तुमने हमको सहारा दिया है
हमने ये जीवन तेरे नाम से जीया है
कैसे भुलाएं गुरुवर तेरी मेहरबानी
तुझसे ही तो बनी है गुरूवर मेरी ज़िंदगानी

परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री आत्म-वल्लभ-समुद्र सूरीश्वर जी महाराज की यशस्वी पट्ट परम्परा पर सुशोभित महान शासन प्रभावक चारित्र-चूड़ामणि, तपस्वी- सम्राट आचार्य श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी महाराज वर्तमान युग के दिव्यात्मा ज्योति-पुरुष थे, उनसे केवल जैन शासन ही नहीं, अपितु समस्त मानव जाति गौरव-मण्डित हो रही है, उनका महान तपस्वी, पुरुषार्थी, चारित्रशील एवं अप्रमत्त जीवन हम सभी के लिये प्रेरक, दीप-शिखा की भांति है।

आचार्य विजय इंद्रदिन्न सुरीश्वर जी महाराज श्वेताम्बर जैन परंपरा के सबसे सम्मानित संत थे। १९२३ में वडोदरा जिले के सलपुरा गांव के परमार क्षत्रिय परिवार में जन्मे, आपने अपना बचपन बहुत ही धार्मिक और पवित्र वातावरण में बिताया। दुर्भाग्य से जब व दस वर्ष के थे, तब उन्होंने अपने माता-पिता दोनों को खो दिया। मात्र ११ साल की उम्र में २२ किलोमीटर दूर दमोई घूमने गए थे। सालपुरा से दूर और रंगविजयजी महाराज के संपर्क में आए, यहीं पर आपने जैन धर्म में अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। दमोई से आप बोडेली गए और १७ वर्ष की आयु तक वहां छात्रावास में रहे। आपने १९४१ में नरसंडा गांव में विनय-विजयजी महाराज द्वारा भगवती दीक्षा प्राप्त की और इंद्रविजय नाम से जैन मुनि बने। गुजरात से राजस्थान की यात्रा की, आपने १९४५ में विकासचंद्र सूरीजी महाराज से उच्च दीक्षा प्राप्त की।

शासन प्रभावक आचार्य श्री जी, श्री आत्म-वल्लभ समुद्र गुरुत्रय की पाट परम्परा के संवाहक रहे, आपने आचार्यपद जब से सम्भाला तब से इस जिम्मेदारी को भली भांति वहन किया। गुरु वल्लभ ने जो स्वप्न देखे थे और जिन स्वप्नों को पूरा करने के लिये आप जीवन पर्यन्त जूझते रहे जो कि अधूरे रह गये थे उन्हीं स्वप्नों को आचार्य श्री जी ने साकार किया, चाहे वे स्वप्न सहधर्मी भाइयों के उत्कर्ष के हों या जैन धर्म के चारों सम्प्रदायों की एकता के, यह कहना उचित ही होगा कि गुरु वल्लभ के बचे कार्यों को आगे बढ़ाया।

स्वास्थ्य की प्रतिकूलता में भी आप बड़े-बड़े तप करते रहे। जैन-धर्म की श्रमण परम्परा में और पंजाब केसरी युगवीर आचार्य वल्लभ के समुदाय में ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी गच्छाधिपति ने बाईपास सर्जरी पश्चात् वर्षी तप किया हो और उनके साथ-साथ उन आज्ञानुवर्ती ३३ श्रमण एवं श्रमणी वृन्द ने उनका अनुसरण करते हुए वर्षी तप किये हों। पूर्ण स्वस्थ ना होने पर भी विविध तपस्यायें कर कर्म-निर्जरा करने में संलग्न रहे।

कतिपय गौरवमय महान कार्य

शासन-नायक श्रमण महावीर स्वामी की ७६वीं पाट परम्परा पर विभूषित श्रमण परम्परा के उज्जवल नक्षत्र आचार्य देवेश श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी म. का व्यक्तित्व और कार्य बहुआयामी एवं बहु क्षेत्रीय था। आपके कुशल नेतृत्व में संघ व समाज के विकास में तथा शासन प्रभावना द्वारा अनगिनत कार्य सम्पन्न किये गए। आत्म-विश्वास और पुरुषार्थ आपकी जीवन साधना के कण-कण में बसा रहा। आपके त्याग, तपस्या, प्रवचन, विहार, जप आदि धार्मिक अनुष्ठानों में आप जैसा दूसरा सानी नहीं मिल पाया। आप पुरुषार्थ की प्रत्यक्ष प्रतिमा थे, प्रचण्ड पुरुषार्थ के बल पर ही आपश्री ने शासन सेवा के महान अनूठे कार्य किये, जिनमें प्रमुख निम्न प्रकार हैं:

(१) गुजरात के बड़ौदा एवं पंचमहल जिलों में बसे एक लाख परमार क्षत्रियों को व्यसनों का परित्याग करवा कर जैन धर्म का अनुयायी बनाकर उनका उद्धार किया।

(२) मध्यम वर्गीय सहधर्मी भाइयों के निवास के लिये दानवीर अभय कुमार ओसवाल को प्रेरित कर विजयइन्द्र नगर लुधियाना में ७५० परिवारों के आवास कालोनी के साथ श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ जैन मन्दिर तथा उपाश्रय का निर्माण एवं सुश्रावक तैयार करने के लिये श्री आत्म वल्लभ जैन धार्मिक पाठशाला की स्थापना करवायी।

(३) शत्रुंजय महातीर्थ पर श्री दादा जी की टूक में न्यायाम्भोनिधि श्रीमद् विजयानन्द सुरीश्वर जी म. की प्रतिमा की पुनः प्रतिष्ठा तथा प्राचीन देहरी का सुन्दर नवीनीकरण करवाया।

(४) श्री विजयानन्द स्वर्गारोहण शताब्दी वर्ष के **शेष पृष्ठ १३ पर...**

पृष्ठ १२ से ... पावन प्रसंग पर विश्व-वंद्य श्री आत्माराम जी महाराज के रचित सम्पूर्ण साहित्य का 'श्री विजयानन्द सूरि साहित्य प्रकाशन फाऊंडेशन' द्वारा पुनः प्रकाशन करवाया।

(५) पावागढ़ तीर्थ जो खण्डहर मात्र रह गया था उसका पुनः उद्धार करवा कर उसे आराधना, साधना एवं शिक्षा का केन्द्र बनवाया। भव्य और कलात्मक जिन मन्दिर, धर्मशाला, भोजनशाला, चिकित्सालय, साहित्य प्रकाशनादि की प्रशंसनीय व्यवस्था की।

(६) बालिकाओं में धार्मिक संस्कार हेतु 'पंजाबी साध्वी श्री देव श्री जैन कन्या छात्रालय' का निर्माण।

(७) आपश्री ने पचासों शहरों और गांवों में जैन मन्दिरों के निर्माण के साथ-साथ धार्मिक पाठशालाएं आरम्भ करवाई ताकि बालकों को धार्मिक संस्कारों से अलंकृत किया जाए। आपकी यह दृढ़ धारणा थी कि युवा पीढ़ी व बच्चों को सुसंस्कारित करने पर ही जैन धर्म टिक सकता है।

(८) बावन वीरों में ४१वें श्री मणिभद्र जी पूज्य गुरुदेव सहायक इष्टदेव वीर थे, आपने इनकी आराधना, साधना कर मध्य रात्रि के समय जिस रूप में श्री वीर को प्रत्यक्ष देखा, उसी रूप में इनकी प्रतिमा निर्मित करवा कर पावागढ़ में प्रतिष्ठित करवाई। आजकल यह श्रद्धालुओं का केन्द्र बना हुआ है और यहां भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण होती है।

(९) परमाराध्य आचार्य श्री जी ने सन् १९९५ तक अपने जीवन-काल में ११ छरी पालित संघ, ८ उपधान तप, बीसों जिनालयों की अंजन-शलाका प्रतिष्ठाएं करवाई। एक लाख किलोमीटर से अधिक भारत वर्ष के विभिन्न प्रांतों में भ्रमण कर जैन शासन की प्रतिष्ठा बढाई।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

Swadesh Jain Mob: 9811644216

S K JAIN & CO.
An Authorized Insurance Agent

F-7, Kohli Plaze, CU Block Market, Uttari Pitampura, Delhi, Bharat-110034

● Motor (All Vehicle) ● Health (Mediclaim)
● Life Insurance ● General Insurance

आप एक सरल स्वभावी, साहित्य-प्रेमी, ज्योतिष विद् एवं जैन-शास्त्रों के प्रकाण्ड विद्वान, मेरू पर्वत की भांति सुदृढ़, मनोबल के धनी, तीनों स्वर्गवासी भगवंतों की भावनाओं को पूर्ण करने में दृढ़ संकल्पी थे। शासनदेव से प्रार्थना है कि चतुर्विधसंघ आपकी छत्र-छाया में दिन प्रतिदिन फलता फूलता रहे।

- कोमल कुमार जैन
चेयरमैन - ड्यूक फैशंस (इंडिया) लिमिटेड, लुधियाना एफ. सी. पी. जीतो

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

पूर्वोत्तर राज्यों में हुयी जैन धर्म की जय-जयकार

गुवाहाटी: शुक्रवार २८ अक्टूबर २०२२ गुवाहाटी स्थित भगवान महावीर धर्मस्थल में ससंघ चातुर्मासार्थ विराजित परम पूज्य गणिनी आर्यिका शिरोमणि गुरुमाँ १०५ विन्ध्यश्री माताजी एवं उनकी संघस्थ श्रमणी आर्यिका १०५ विद्वतश्री माताजी द्वय की चल रही ८० दिवसीय उपवास की सिंह निष्क्रीड़ित व्रत साधना के निर्विघ्न समापन के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन मंदिर के ए.सी. हॉल में सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री ओमप्रकाश-प्रभादेवी, संदीप-सबिता, सचिन-अमिता, यशस्वी, लहर, अवयुक्त, अव्यान सेठी परिवार गुवाहाटी/ बैंगलोर की ओर से द्वय माताजी के सुस्वास्थ्य, दीर्घ जीवन एवं अपने लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त करने की कामना के साथ आयोजित शांतिविधान हर्षोल्लास के साथ सानन्द संपन्न हुआ।

पूज्य गुरुमाँ एवं संघस्थ श्रमणी आर्यिका विद्वतश्री माताजी द्वय के व्रत समापन पर समाज की ओर से महापारणा का भव्यातिभव्य आयोजन किया गया, जिसमें निम्नांकित सौभाग्यशाली परिवारों ने पुण्यार्जक बन समस्त संघ को पारणा आहार कराने का महान पुण्य का अर्जन किया।

⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री ओमप्रकाश-प्रभा, संदीप-सबिता, सचिन-अमिता, यशस्वी, लहर, अवयुक्त,अव्यान सेठी गुवाहाटी/बैंगलोर परिवार
⇨ सुश्राविका श्रीमती बसंती देवी, श्रीमती बीना देवी, श्रेष्ठी सर्वश्री सौरभ-रूचिका, समर, समायिरा परिवार (झूमरमल अशोक कुमार अजमेरा, गुवाहाटी)
⇨ उपकार क्लासेस अन्तर्गत श्री दिगम्बर जैन पंचायत, गुवाहाटी
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री फतेहचंद, सुनिल कुमार, विनीत कुमार पाटनी, दूधनोई परिवार
⇨ स्व.शांतिलाल रतनदेवी की स्मृति में सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री सुशील कुमार संगीता देवी एवं अंकुर गंगवाल (संगीता इन्टरप्राइजेज, गुवाहाटी) परिवार
⇨ झूमरमल पन्नालाल गंगवाल हाथीगोला परिवार, गुवाहाटी
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री पदमचंद-शांतिदेवी, श्री संजय-शालिनी, श्री सुमित कुमार-रीतिका एवं रजत-सिमरन पाटनी, गुवाहाटी परिवार
⇨ स्व.भंवरलाल जी बड़जात्या की स्मृति में सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री संजय कुमार एवं समस्त बड़जात्या परिवार, मालीगांव, गुवाहाटी
⇨ गुप्त परिवार, गुवाहाटी
⇨ समाज सेवी एवं धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री भागचंद-कंचनदेवी बड़जात्या, श्री दिपेश-पायल, पलकसा, कनव एवं समस्त बड़जात्या परिवार, गुवाहाटी
⇨ श्रीमती सारीका, वन्दन कुमार युवराज सेठी संग शोभागचंद पांड्या परिवार गुवाहाटी
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री दानमल मनोज कुमार सौगानी परिवार गुवाहाटी
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री अशोक कुमार, दिया, यश, रीतिका, गोरव सेठी परिवार दिनहाटा/लेह लदाक
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री नेमीचंद-चंद्रकला देवी छाबड़ा परिवार (N.K.Store, Guwahati)
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री विनय कुमार ममता देवी छाबड़ा, गुवाहाटी
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री महावीर प्रसाद ललित कुमार मनीष कुमार छाबड़ा परिवार (G.M., Guwahati)
⇨ स्व.महावीर प्रसाद पांड्या की पुण्य स्मृति में श्रीमती इंद्रा देवी, प्रेमलता, रीना दीदी, राकेश, विकास, अभिषेक, यश, वीर पांड्या परिवार गुवाहाटी
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री घेवरचंद विशाल कुमार छाबड़ा परिवार गुवाहाटी
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री जयचंद लाल नरेश कुमार सेठी लाडनूं निवासी डीमापुर/गुवाहाटी प्रवासी
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री चिरंजीलाल-शरबती देवी, संजीव कुमार-कविता देवी बाकलीवाल, गुवाहाटी परिवार
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री महेंद्र कुमार-ऊषा देवी पांड्या परिवार इटानगर/ गुवाहाटी
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री कैलाश चंद प्रकाश चंद मिठू जैन काला रंगिया परिवार
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री राजेश ठौल्या, कानकी/गुवाहाटी परिवार
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी अशोक कुमार गीता देवी पांड्या परिवार गुवाहाटी
⇨ स्व. राजकुमार की पुण्य स्मृति में श्रीमती सीता देवी, पीयूष, सीखा पांड्या परिवार गुवाहाटी
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री शांतिलाल विकास छाबड़ा परिवार गुवाहाटी
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री सुभाष चंद सरीरा छाबड़ा चैनई/गुवाहाटी परिवार
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सुभाष चंद अभिषेक कुमार बगड़ा परिवार गुवाहाटी
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री भागचंद सुनिता चूड़िवाल परिवार गुवाहाटी
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री पंखिल एवं श्रीमती खुशबू जैन दिल्ली परिवार
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी राजकुमार संगीता देवी दीपाली देवी छाबड़ा नलबाड़ी
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री संजय, अजय, विशाखा सेठी परिवार गुवाहाटी
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी सर्वश्री सुरेश कुमार विमल कुमार कुसुम देवी छाबड़ा
⇨ सुश्रावक श्रेष्ठी मोहनलाल - हीरादेवी, विकास गंगवाल परिवार गुवाहाटी

आर्यिका संघ व्यवस्था समिति उक्त गुप्त परिवार सहित सभी सौभाग्यशाली पुण्यार्जक परिवारों, उपकार क्लासेस के सदस्यों एवं चौका में गुरु मां ससंघ को नियमित आहार कराने वाली समस्त महिला-पुरूषों का हृदय से अभिनन्दन करते हुए आभार प्रकट करती हैं साथ ही उपरोक्त सभी धर्मावलंबियों के सुख-समृद्धि, आरोग्य एवं दीर्घायु जीवन की मंगल कामना करती हैं।

- आर्यिका संघ व्यवस्था समिति अन्तर्गत
श्री दिगम्बर जैन पंचायत, गुवाहाटी, असम

श्री सूर्यपहाड़ (असम) में महानिर्वाणोत्सव कार्यक्रम संपन्न

श्री सूर्यपहाड़ असम: स्थानीय चौबीसी जिन चैत्यालय में विगत २७ अक्टूबर को जैन श्रावकों द्वारा भ. महावीर का निर्वाण कल्याणक महोत्सव परंपरागत ढंग से तथा हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। उनकी पावन स्मृति में निर्वाण लाडू चढ़ाकर उन महामानव का स्वागत किया गया।

सर्वप्रथम स्थानीय जैन श्रावकों ने अमावस्या के ब्रह्म मुहूर्त में मंदिर के परिसर पर दीपों की दीपमालिका संजोए गए।

ज्ञातव्य हो कि यह दीपावली पर्व तीर्थंकर महावीर के निर्वाणोत्सव दिवस के प्रतीक के रूप में २५४० वर्षा पूर्व बिहार के पावापुर के निर्वाण स्थल से प्रारंभ हुआ था। जैनियों के २४वें तीर्थंकर भगवान महावीर ने इसी दिन यानी कार्तिक कृष्ण अमावस्या के मंगल प्रभातकल में मुक्ति पाई थी। तीर्थंकर महावीर के निर्माण काल के समय वहां नौ लिच्छवी और नौ मल्ल गणतंत्र राजाओं के साथ असंख्य मल्ल गण उपस्थित थे। उन्होंने ज्ञान सूर्य के निर्वाण हो जाने पर स्नेहापुरित (घी से भरे हुए) दीपों की दीपमालिका संजोकर तीर्थंकर महावीर का निर्वाणोत्सव मनाया था। जैनियों ने नया साल यानी वीर निर्वाण संवत महावीर के मोक्ष जाने के दिन से आरंभ हुआ था।

उक्त पुनीत अवसर पर श्री चौबीसी जिनालय में क्षेत्र के व्यवस्थापक विधानाचर्य मोतीलाल पांड्या के निर्देशन में तीर्थंकर महावीर का अभिषेक एवं शांति धारा के साथ संपन्न किए गए। तत्पश्चात नित्य नियम पूजन एवं भगवान महावीर की विशेष पूजन अर्चना भक्ति भाव पूर्वक की गई। पूजन के दौरान निर्वाण कांड एवं निर्वाणकल्याण दोहा बोलकर जैन श्रावकों ने अपने आराध्य देव महावीर स्वामी को सामूहिक रूप से निर्वाण लाडू अर्पण किया। कार्यक्रम की समाप्ति पर सामूहिक रूप से आरती भी की गई। समिति के अध्यक्ष महावीर जैन (हाथीगोला), उपाध्यक्ष ओम प्रकाश शेठी, सुमेरचंद गोधा कोषाध्यक्ष ने कार्यक्रम को सफल बनाने में उपस्थित श्रद्धालुओं को धन्यवाद ज्ञापन प्रेषित किया तथा समस्त पूर्वांचल जैन समाज को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित किए।

- जिनागम संवाददाता
मोतीलाल जैन 'प्रभाकर'
ग्वालपाड़ा, असम

हम भारतीय हैं भारत माता की जय बोलते हैं
हम INDIAN नहीं क्योंकि INDIA कभी माँ नहीं बन सकती
निवेदन यह है कि
भारत को केवल BHARAT ही बोलें INDIA नहीं
जय भारत! जय भारत! जय भारत!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

Dayanidhi Kasliwal
Mob. : 9928036639
JAIPUR,
RAJASTHAN, BHARAT - 302003
e-mail : dayanidhikasliwal@gmail.com

जय भारत! जय भारत! जय भारत!

करते हैं प्रीत भारत से!
कहेंगे देश को केवल भारत
आप भी बोलें 'भारत' को केवल BHARAT
INDIA नाम तो गुलामी का प्रतीक है

Bachhraj Chordia
Mob: 94351 88490
Saraswati Rice Mill
Dhopguri, Dhopguri,
Kamrup (m), Assam- 782403

Surya Rice Mill
Hatigarh, Dhemaji, Assam-787057

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!!

'जय जिनेन्द्र' की जयवन्त प्रेरणाएं

मानवीय सम्बन्ध और व्यवहार में कई तरीकों से शिष्टाचार का पालन किया जाता है। एक सर्वमान्य तरीका है-अभिवादन करना। अभिवादन के अनेक रूप हैं और अनेक शब्द प्रयोग हैं। भावना, श्रद्धा, क्षेत्र, भाषा आदि के अनुसार भारत में अनेक प्रकार के अभिवादन हैं। जैन समाज में 'जय जिनेन्द्र' अभिवादन सर्व प्रचलित है। विश्व के जिस किसी देश में जैन रहते हैं, वहाँ 'जय जिनेन्द्र' अभिवादन प्रचलित है, इस प्रकार यह एक वैश्विक अभिवादन है, इसमें हमारी भाषा, संस्कृति और संस्कारों का गौरव है।

'जय जिनेन्द्र' सिर्फ जैन समाज तक ही सीमित नहीं है, अनेक स्थानों और अवसरों पर जैन-जैनेतर सबके बीच सहज रूप में 'जय जिनेन्द्र' से अभिवादन किया जाता है, कभी-कभी अवसर के अनुसार भी 'जय जिनेन्द्र' अभिवादन किया जाता है, जैसे ३ मई २०२२, अक्षय तृतीया को दिल्ली में तीर्थंकर महावीर चिकित्सालय शिलान्यास समारोह में पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने अपने सम्बोधन की शुरुआत 'जय जिनेन्द्र' अभिवादन से की थी और सम्बोधन का समापन 'जय जिनेन्द्र' और जय हिन्द के साथ किया था। गत दिनों सोनी टीवी का एक विश्व प्रचारित सिरियल 'कौन बनेगा करोड़पति' में फिल्म जगत के महानायक अमिताभ बच्चन ने पूछा था कि 'जय जिनेंद्र' कौन सा समाज बोलता है और इसका अभिप्राय क्या है?

यह भी स्पष्ट है कि 'जय जिनेन्द्र' के माध्यम से अवसर के अनुसार व्यक्तिगत और सामूहिक, दोनों प्रकार का अभिवादन होता है। मौखिक के अलावा पत्र आदि में लिखित 'जय जिनेन्द्र' भी किया जाता है। हाँ! 'जय जिनेन्द्र' अभिवादन सिर्फ गृहस्थजनों के मध्य ही होता है, सन्तों के प्रति विनय के लिए अलग शब्द और अलग भाव होते हैं।

जैनधर्म के सर्वमान्य सूत्र नवकार महामन्त्र में जिस प्रकार किसी व्यक्ति का नाम नहीं है, उसी प्रकार 'जय जिनेन्द्र' अभिवादन में भी किसी का नाम नहीं है। यह गुणवाचक अभिवादन है, जिन्होंने अपनी इन्द्रियों को जीत लिया, जो वास्तविक विजेता बन गये उन जिनेन्द्र परमात्मा की इसमें जय है, इस जयकार के साथ व्यवहार में एक-दूसरे को नमस्कार किया जाता है और श्रद्धास्पद माध्यम से शिष्टाचार निभाया जाता है।

गहराई से देखें तो 'जय जिनेन्द्र' अभिवादन में अनेक शुभ सन्देश और पावन प्रेरणाएँ हैं। दो शब्दों और पाँच अक्षरों के इस अभिवादन की मुख्यत: पाँच प्रेरणाएँ हैं-विनय, वाणी-विवेक, साधर्मी वात्सल्य, जैन एकता और जैन होने का गौरव, जानते हैं इन प्रेरणाओं को:

(१) विनय

आगम-साहित्य में विभिन्न सन्दर्भों में विनय के अनेक प्रकार बताए गये हैं और अनेक व्याख्याएँ की गई हैं। यहाँ उन शास्त्रीय व्याख्याओं में नहीं जाते हुए 'जय जिनेन्द्र' अभिवादन के सन्दर्भ में विनय के बारे में चर्चा अभिप्रेत है। विनय के दो प्रकार मुख्य हैं-लौकिक विनय और लोकोत्तर विनय।

'जय जिनेन्द्र' अभिवादन का मुख्य सम्बन्ध लौकिक विनय यानी व्यवहार विनय और पारस्परिक शिष्टाचार से है। व्यवहार पक्ष की शिष्टता, विनम्रता और सरलता आपसी सम्बन्धों को सुमधुर, सुदृढ़ और स्थायी बनाती है तथा आध्यात्मिक साधना में भी सहायक तथा सुफलदायी होती है।

स्थानांग सूत्र में विनय के सात प्रकार बताए गए हैं-ज्ञान, दर्शन, चारित्र, मन, वचन, काया और लोकोपचार विनय। मोटे तौर पर 'जय जिनेन्द्र' अभिवादन लोकोपचार विनय है, लोक-व्यवहार का विनय है, लेकिन इस विनय के साथ भी हमने जिनेन्द्र भगवान का स्मरण किया है, उनकी जयकार की है, जब हम हाथ जोड़कर 'जय जिनेन्द्र' बोलते हैं तो लोक-व्यवहार विनय के साथ वचन विनय और काया विनय तो हो ही जाता है और यदि मन से 'जय जिनेन्द्र' कहते हैं तो मन विनय भी हो जाता है।

'जय जिनेन्द्र' के माध्यम से किसी को नमस्कार किया जाता है तो नमस्कार पुण्य हो जाता है, जो पुण्य का नौवाँ भेद है, इससे पूर्व मन, वचन और काया ये तीन पुण्य भी हैं। यदि हाथ जोड़कर, मान मोड़कर और मन से 'जय जिनेन्द्र' किया जाए तो मन, वचन और काया पुण्य का लाभ भी मिल जाता है।

विनय तप भी है। उत्तराध्ययनसूत्र में विनय तप के लिए पाँच बातें बताई गयी हैं- खड़ा होना, हाथ जोड़ना, आसन देना, गुरुभक्ति और भावपूर्वक सेवा। हमारे व्यावहारिक जीवन के अभिवादन में गुरुभक्ति को छोड़कर विनय तप की एक से चार बातें लागू हो सकती हैं। किसी के आने पर हम प्राय: खड़े होते हैं, हाथ जोड़कर 'जय जिनेन्द्र' कहते हैं और उसे बैठने के लिए कहते हैं। आतिथ्य या पारस्परिक सहयोग भाव भी 'जय जिनेन्द्र' का फलित माना जा सकता है। यानी 'जय जिनेन्द्र' भी यदि कोई ढंग से कर लेता है तो चार प्रकार का विनय, चार प्रकार के पुण्य और विनय तप के चार चरणों का सुफल भी मिल जाता है। 'जय जिनेन्द्र' गीत की शुरूआती पंक्तियाँ विनय और जय जिनेन्द्र की इसी प्रकार की अर्थपूर्ण अभिन्नता दर्शाती हैं -

विनय धर्म को धारण करके गाँठ अहम की खोलें
'जय जिनेन्द्र' हम बोलें।
हाथ जोड़कर, मान मोड़कर प्रेम से हौले हौले
'जय जिनेन्द्र' हम बोलें।

'जय जिनेन्द्र' के माध्यम से अहम की गाँठ खोलकर, मन और मान को मोड़कर विनय की सच्ची आराधना करनी चाहिये।

शेष पृष्ठ १७ पर...

भारत को केवल BHARAT ही बोलें INDIA नहीं
बुधवार १६ नवंबर २०२२
दिल्ली के सर्वोच्च अदालत में आयोजित कार्यक्रम
की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं
जय भारत! जय भारत! जय भारत!

PMJF Lion GANESH SAMSUKHA
Region Chairperson
Region Vairam
Mob. : 95439 36363 / 8838561405
The International Association Of Lions Clubs
District 324-B 2021-2022

Geem Enterprises
Manufactures & Stockists Of :
PIPES & PIPE FITTINGS, CI & DI PIPE FITTINGS,
G.M. VALVE & COCKS, C.P. BATH ROOM FITTINGS,
C.I.D / F. SLUICE VALVE, REFLEX (NON RETURN) VALVES
SINGLE & DOUBLE, AIR VALVE & MAINHOLE COVER
72, West Masi Street, Madurai, Tamil Nadu, Bharat - 625 001

हम भारतीय हैं भारत माता की जय बोलते हैं
हम INDIAN नहीं क्योंकि INDIA कभी मॉ नहीं बन सकती
निवेदन यह है कि
भारत को केवल BHARAT ही बोलें INDIA नहीं
जय भारत! जय भारत! जय भारत!

Shripal Jain
Mob : 9830049980
C-406, Oxford View,
32/36, D.H. Road,- Kolkatta,
West Bangal, Bharat- 700008

पृष्ठ १६ से ... **(२) वाणी-विवेक**

'जय जिनेन्द्र' बहुत अच्छा शब्द प्रयोग है, जब हम कुछ अच्छा बोलते हैं तो उसका एक अर्थ यह है कि हमें बुरा, अप्रिय और असत्य नहीं बोलना है। यूँ तो जीव के त्वीन्द्रिय होते ही, त्रस पर्याय पाते ही, उसे वचन बलप्राण मिल जाता है, लेकिन वचन और वाणी का जो अतिशय वैभव मनुष्य के पास है, वैसा किसी भी प्राणी के पास नहीं है। शब्द, भाषा, व्याकरण, साहित्य, संगीत आदि अनेक माध्यमों से मानव ने वचन, बल, प्राण को अपरिमित ऊँचाइयाँ दी हैं। भाषा समिति और वचन गुप्ति का पालन करके हमें वाणी को प्रभावी, साताकारी और शान्तिकारी बनाना चाहिये। वाणी-संयम 'जय जिनेन्द्र' का एक बहुत ही उपयोगी, व्यक्तित्व उन्नायक और जीवन निर्माणकारी सन्देश है। 'जय जिनेन्द्र' गीत का पाँचवाँ पद भी यह सन्देश देता है-

दीर्घ साधना का सुफल है यह वाणी की सत्ता।
बोल-बोल करते रहते समझी नहीं मौन महत्ता।
बोलें पर उससे पहले हम एक बार फिर तोलें।
'जय जिनेन्द्र' हम बोलें।

(३) साधर्मी वात्सल्य

'जय जिनेन्द्र' साधर्मी वात्सल्य की प्रबल प्रेरणा देता है। साधर्मी वात्सल्य का अर्थ है जो समानधर्मी, सहधर्मी और स्वधर्मी हैं, उनके प्रति विशेष प्रेम, अनुराग और सद्भाव रखना। साधर्मी वात्सल्य का जो प्रचलित अर्थ है, वह सिर्फ भावनात्मक अनुराग तक ही सीमित नहीं है, वह समय, पात्रता और आवश्यकता के अनुसार वास्तविक सहयोग करने तक विस्तृत है। व्यक्ति अपनी भावना और क्षमता के अनुसार साधर्मी सहयोग को कई प्रकार की मर्यादाओं में बाँध सकता है और कई प्रकार से विस्तार दे सकता है। मर्यादा और विस्तार के कुछ उदाहरण इस प्रकार हो सकते हैं-

१. अपने धर्म के व्यक्तियों तक,
२. अपनी सम्प्रदाय या उप-सम्प्रदाय के लोगों तक,
३. अपने स्व-गोत्रीय बन्धुओं तक,
४. अपने स्व-क्षेत्रीय बन्धुओं तक,
५. अपने व्यवसाय या कार्यस्थल से जुड़े साधर्मी व्यक्तियों तक,
६. परिवारजनों और सगे-सम्बन्धियों तक,
७. किसी विशेष उद्देश्य को समर्पित सहयोग, जैसे-साहित्य, शिक्षा, चिकित्सा आदि और
८. किसी विशेष अवसर, परिस्थिति या आपदा में सहयोग करना।

साधर्मी वात्सल्य 'जय जिनेन्द्र' की एक ऐसी प्रेरणा है, जिसमें हमारा सहयोग भाव प्रकट होता है, विकसित होता है, यदि हम किसी भी रूप में हमारे किसी भाई या बहिन का कोई सहयोग कर सकते हैं तो इससे 'जय जिनेन्द्र' बोलने का गौरव बढ़ता है। 'जय जिनेन्द्र' गीत का नौवाँ पद है-

जय विजय का भाव हृदय में अभिवर्धित है होता
बढ़ता है विश्वास परस्पर मन खुशियों से भरता
जिनको खुशियाँ कम नसीब हैं उनके भर दें झोले
'जय जिनेन्द्र' हम बोलें।

(४) जैन एकता

जैन धर्म के सर्वपंथों में जिस प्रकार 'णमोकार मन्त्र' सर्वमान्य है, उसी प्रकार 'जय जिनेन्द्र' अभिवादन में भी कोई मतभेद शेष पृष्ठ १८ पर...

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १७ से... नहीं है। 'जय जिनेन्द्र' अभिवादन हमें 'जैन एकता' का बोध कराता है। जिनेन्द्र भगवान के प्रति श्रद्धा रखने वाले और उनकी जय बोलने वाले सभी जैनों में एकत्व का भाव होना चाहिये। हमें यह स्मरण रखना चाहिये कि नवकार महामन्त्र में जिनेन्द्र तीर्थंकर (अरिहन्त और सिद्ध परमात्मा) का स्थान प्रथम है, उनके बाद ही गुरु का स्थान है। पंच परमेष्ठी में जिनेन्द्र तीर्थंकर प्रथम हैं, इस तथ्य को ध्यान में रखने से जैन समाज की सम्प्रदायवाद की समस्या का समाधान हो सकता है। युवा पीढ़ी, साधारण जैन और जनसामान्य भेदभाव की बातों को न तो समझता है और न ही समझना चाहता है। आज दुनिया जैनत्व चाहती है, लेकिन जैनत्व में एकत्व देखना चाहती है। 'जय जिनेन्द्र' गीत के सातवें पद में इसी भाव को शब्द दिया गया है-

मतभेदों के कारण से मनभेद न होने पाए
भेद के भीतर जो अभेद है वह समझें-समझाएँ
बिना समन्वय सद्भावों के जिनशासन यह डोले
'जय जिनेन्द्र' हम बोलें।

'जय जिनेन्द्र' के माध्यम से विनय, वाणी-संयम और साधर्मी वात्सल्य के माध्यम से भी एकता और सौहार्द की भावनाएँ पुष्ट होती हैं।

(५) जैन होने का गौरव

'जय जिनेन्द्र' के माध्यम से जैन होने का गौरव भी अभिवर्धित होता है। जिनेन्द्र भगवान की शाश्वत परम्परा से अनेक गौरवशाली तथ्य जुड़े हैं, जैसे, जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ के ज्येष्ठ पुत्र प्रथम चक्रवर्ती भरत नाम से हमारे देश का नाम 'भारत' हुआ, इस तथ्य को 'जय जिनेन्द्र' गीत में यूँ अभिव्यक्त किया गया है-

ऋषभ-पुत्र भरत का भारत, भारत का यह गौरव
इतिहासों से परे पर खरे, ऋषि-मुनियों के अनुभव
उनके कालजयी सन्देशों को क्यों कर हम टालें
'जय जिनेन्द्र-जय भारत' हम बोलें

जैनधर्म, दर्शन, समाज और संस्कृति की अनेक विशेषताएँ हैं। जैन समाज के अहिंसा, सेवा और तपस्या के आदर्श अनुपम और अद्वितीय हैं। हिंसक और तोड़फोड़ की गतिविधियों से दूर रहने वाला जैन समाज शान्तिप्रिय, अनुशासित, देशभक्त और मानवतावादी समाज है। थोड़ी आबादी के बावजूद आनुपातिक दृष्टि से सर्वाधिक आयकर चुकाने वाला यह समाज दानशीलता में भी अव्वल है। दानशीलता, उदारता और रचनात्मक दृष्टिकोण के फलस्वरूप ही शिक्षा, चिकित्सा, मानवसेवा और जीवदया के अनेक कार्य, कार्यक्रम और संस्थान जैन समाज द्वारा संचालित होते हैं। अत: 'जय जिनेन्द्र' अभिवादन के साथ 'जैन' होने के गौरव की अनुभूति भी की जानी चाहिये, जैन होने के गौरव को बढ़ाने के कार्य करने चाहिये।

(६) जागरण का सूत्र

'जय जिनेन्द्र' के पन्द्रहवें पद में जागने और जगाने का आह्वान किया गया है-

आत्म-विस्मृति आत्म-वञ्चना खूब हुई अब त्यागें
उमर जा रही सोते-सोते भाव नींद से जागें
कुछ कहने लायक करने का सत्संकल्प संजो लें
'जय जिनेन्द्र' हम बोलें।

आत्म-विस्मृति और आत्म-वञ्चना के कारण 'जय जिनेन्द्र' की प्रेरणाएँ जनव्यापी नहीं हो पा रही हैं। आत्म-विस्मृति का सरल अर्थ है, स्वयं को भूलना, स्वयं की क्षमताओं और सम्भावनाओं को भूलना तथा स्वयं की संस्कृति, परम्परा और इतिहास को भूलना। गौरवशाली सांस्कृतिक प्रतिमानों की उपेक्षा को भी आत्म-वञ्चना कह सकते हैं। 'जय जिनेन्द्र' की प्रेरणा यह है कि हम स्वयं को तथा स्वयं के वैभव को नहीं भूलें। आत्म-वञ्चना का अर्थ होता है, स्वयं को धोखा देना या स्वयं के साथ छल करना। कभी-कभी व्यक्ति सोचता है कि वह किसी दूसरे को धोखा दे रहा है, लेकिन गहराई से देखें तो व्यक्ति खुद को ही धोखा दे रहा होता है। ऐसी विस्मृति और ठगाई से बचने के लिए भाव-निद्रा से जागना आवश्यक है। भाव-निद्रा के दो पक्ष हैं-सांस्कृतिक और दूसरा आध्यात्मिक। परम्परा और संस्कृति की श्रेष्ठताओं से बेखबर रहना सांस्कृतिक भाव-निद्रा है। आत्म-साधना में प्रमाद करना आध्यात्मिक भाव-निद्रा है। द्रव्य निद्रा से तो रोज सुबह हम जागते ही हैं। द्रव्य निद्रा से किसी को जगाया भी जा सकता है, लेकिन भाव निद्रा से किसी को जगाना बहुत बड़ी चुनौती है, हम भाव नींद से जागें और कुछ श्रेष्ठ करने के लिए कदम बढ़ाएँ। इस प्रकार यह दिन के उजाले की तरह सुस्पष्ट है कि 'जय जिनेन्द्र' मात्र एक अभिवादन ही नहीं है, अपितु अनेक महनीय दायित्वों का बोध कराने वाला अर्थपूर्ण एवं भावपूर्ण प्रेरणा-सूत्र भी है। पहले कहा गया कि 'जय जिनेन्द्र' अभिवादन व्यक्तिनिष्ठ नहीं होकर वस्तुनिष्ठ है, गुणवाचक है, इसलिए यह अभिवादन जैन समाज तक सीमित नहीं है और इसे जैन समाज तक सीमित नहीं रखना चाहिये, इसी तथ्य को 'जय जिनेन्द्र' गीत के ६वें पद में पिरोया गया है-

'जिनागम' की एक ही गुजारिश बनें विराट्हृदय के
तब हम पात्र बनेंगे सचमुच श्री जिनेन्द्र की जय के।
जैनमात्र ही नहीं इसे अब जन-जन मिलकर बोलें।
'जय जिनेन्द्र' सभी भारतीय बोलें।

हमारा प्रेम और अपनापन इतना सहज, सघन और समत्वपूर्ण हो कि 'जय जिनेन्द्र' और जय जिनेन्द्र के अहिंसा, अनेकान्त आदि सर्वहितकारी सन्देश जन-जन तक पहुँचाए जाएं।

- डॉ. दिलीप धींग, निदेशक
अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र
चेन्नई

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

Bharathiya Janatha Party
Chennai West District
M. Askaran Jain
District Secretary OLC
No. 77 Station Road, Varadharajapuram, Ambatturam, Chennai,
Tamil Nadu, Bharat - 600053 | Mob.:- 9840137230/8825744854
e-mail : - askaranjain351954@gmail.com

हाय, हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए!

Ideal place for
Marriages, Conferences & Relaxation

Khanvel RESORT SILVASSA

09320023557
09824056861
022-26352635
022-26305555

follow us on:
/thekhanvelresort
/khanvelresort
www.khanvelresort.com

sales@khanvelresort.com

VALUE COUNTER MODEL - KM 9014A
UPDATES WITH NEW NOTES

NEW PRODUCT

FEATURES :
- Automatic start, stop and clear.
- With Batch, Add and Self-checking functions.
- UV, MG, IR and MT counterfeit detection.
- Automatic half-note, chained note detecting.
- Double-note detecting with IR.
- LCD turns red when detects fake note.

SPECIFICATIONS :
- Counting Display : 4 digits
- Batch Display : 3 digits
- Counting speed : 1000pcs/min
- Hopper Capacity : 300 notes
- Stacker Capacity : 200 notes
- Size of countable note : 50*110-90*190mm
- Power Supply : AC220V±10% 50Hz
- Power Consumption : ≤ 80W
- Size of box : 375*333*251 mm

KUSAM-MECO® An ISO 9001:2015 Company
Shop No. 18, 1st floor, CIDCO Shopping Complex, Plot No 9, Sector-7, Rajiv Gandhi Marg, Sanpada,Navimumbai-400705. INDIA. Tel.: 022-27754546, 27750662 / 0292
Email :sales@kusam-meco.co.in Web : www.kusamelectrical.com

बिजय जी आप आगे बढें एक दिन
हम सबके राष्ट्र का नाम केवल 'भारत' ही होकर रहेगा

Samrat Jewellers SJ

नवग्रह रत्नों के व्यापारी
मणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा,
नीलम गोमेदक, लहसुनिया, नवग्रह रत्न अपनी राशी के
अनुसार रत्न धारण करने से हर समस्या दूर होकर,
स्वास्थ लाभ, समुद्र शाली, व हर क्षेत्र
में सफलता प्राप्त होती है
हमारे यहां सभी राशियों के रत्न हमेशा उपलब्ध रहते हैं
एक बार अवश्य संपर्क करें

अनोखीलाल नाहर जैन **पंकज नाहर जैन**

३९ - ए कीर्तीकर मार्केट, दादर (पश्चिम), मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०००२८ फोन ०२२-२४३०६६४२

जय भारत! जय भारत! जय भारत!

करते हैं प्रीत भारत से!
कहेंगे देश को केवल भारत
आप भी बोलें 'भारत' को केवल BHARAT
INDIA नाम तो गुलामी का प्रतीक है

Vinod Kumar Jain (Begwani)
Mob: 9334858709/ 7991133993

Pukhraj Enterprises

Trader of: House Hold, Plastic Goods & General Order Suppliers

Pyada Toli, Upper Bazar,
Ranchi, jharkhand-834001

बिजय जी आप आगे बढें एक दिन
हम सबके राष्ट्र का नाम केवल 'भारत' ही होकर रहेगा

भंवरलाल पगारिया जैन
वरीष्ठ उपाध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
भूतपूर्व अध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
कार्यकारिणी सदस्य
अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, दिल्ली
मुख्य मार्गदर्शक
श्री मरुधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति, बैंगलोर
37, हॉस्पीटल रोड, बेंगलोर, कर्नाटक, भारत- 560053
फोन :- 080 22383557 मो. - 09448238429

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

पं. भरतकुमार काला बने थे मुनी एकत्व सागरजी क्षुल्लक दिक्षा से मुनी दिक्षा की और अग्रसर हुए थे

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के धर्म संरक्षणी महासभा के केंद्रीय उपाध्यक्ष, भारतवर्षीय दिगम्बर महासभा का मुख पत्र तथा राष्ट्रिय हिन्दी जैन समाज का साप्ताहिक 'जैन गजट' के प्रधान सम्पादक पं. भरत कुमार काला का मुंबई में ७५ वर्ष पुरे होने के उपलक्ष में 'अमृत महोत्सव' मनाया गया था। पं. भरत कुमार जी एक विद्वान के रुप में भारतवर्ष में प्रख्यात थे, आपने लौकिक शिक्षा की दृष्टि से एम.एस.सी किया था। धार्मिक और सामाजिक लगन होने से आपने 'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा दिल्ली से जुड़ना पसंद किया और आपने अंतिम क्षण तक महासभा के द्वारा प्रकाशित 'जैन गजट' के माध्यम से अपने सशक्त लेखनी से समाज प्रबोधन एवं समाज को दिशा दिग्दर्शन करते रहे। समयसार, नियमसार, अस्ट पाहुड, तत्वार्थसूत्र, रतनकरंड श्रावकाचार, पद्म पुराण आदी ग्रन्थों का गहन अध्ययन आपको था। भारतवर्ष के प्रखर, प्रकांड, प्रख्यात विद्वान पं. तनसुखलालजी काला एवं पं. माणिकचंद जी काला मुंबई के आप भतिजे थे। जैन दर्शन के विद्वान सम्पादक पं. तेजपाल-जी काला, नांदगाव एवं जानकी देवी काला के आप सुपुत्र थे। बाल्यकाल से आप सादा जीवन पद्धति पसंद करते थे। मंदीर जाना, मुनियों से बात करना, माताजी, आर्यिकाओं से प्रश्न पुछना आपकी विशेषता थी।

तत्वार्थसूत्र, रत्नकरंड श्रावकाचार, पद्मपुराण संबधी कुछ प्रश्न पुछते तो आचार्य और मुनी भी दंग रह जाते। मध्य प्रदेश के प्रख्यात विद्वान पं सत्तेन्धर कुमार जी सेठी, उज्जैन की विदुषी कन्या शैलबाला से आपका विवाह हुआ। शैल बालाजी ने उत्कृष्ट गृहस्थ जीवन व्यतित करते हूए अपने पति के प्रत्येक कार्य में सहयोग किया। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के प्रती सदैव समर्पित रहीं। 'जैन महिलादर्श' की आप सहसम्पादिका हैं। आपके विचार और प्रबंधन से समाज विशेषकर महिलाएं लाभान्वित हो रही हैं।

अमृत महोत्सव के बाद पं. भरतकुमारजी के मुनी के भाव अधिक प्रबल हूए, तब पं. भरत कुमार जी काला मुंबई से सिद्ध क्षेत्र सम्मेदशिखर जी पहुंचे। आचार्य मुनी पुण्यसागर जी के सान्निध्य में मुनी दिक्षा' लेने के भाव व्यक्त किये, मुनी पुण्य सागर जी ने स्वीकृती प्रदान की।

पण्डित भरत जी को आचार्य मुनी पुण्यसागर जी ने ४ अगस्त २०२२ को 'क्षुल्लक दिक्षा' प्रदान की और क्षुल्लक 'एकत्व सागर' नामकरण किया। स्वास्थ्य गिरता गया और ४ दिन के बाद ही आचार्य पुण्यसागर जी ने ८ अगस्त २०२२ को मुनी दिक्षा प्रदान की और मुनी एकात्म सागर नामकरण किया।

मुनी एकत्व सागर जी (भरत जी) का क्षण-क्षण स्वास्थ्य गिरता चला गया। १३ सितम्बर २०२२ को अन्न त्याग कर दिया, केवल जल और दो चम्मच दुध ही लेते थे। मुनीएकत्व सागर जी ने जल और दुध का भी त्याग करने की विनंती की। आचार्य मुनी पुण्य सागर जी ने स्वीकृती प्रदान की। चारों प्रकार के आहार का आजन्म त्याग कराया, जैसे-जैसे सल्लेखना आगे बढती गई, परिवार जन, रिश्तेदार, परिचित सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शिखर जी की और अग्रसर होने लगे। मुनि एकत्व सागर जी के नजदीक कोई ना कोई मुनी, साधू, त्यागी उपस्थित रहता, क्षुल्लक ऐश्वर्य सागर जी नियमित अंत समय तक उनके पास रहे। मुनी १०८ एकत्व सागर जी महाराज जी, एक माह और १४ दिन में क्षुल्लक दिक्षा, मुनी दिक्षा, यम सल्लेखना पूर्वक समाधी मरण शास्वत तिर्थराज श्री सम्मेद शिखरजी में होना तथा वात्सल्य मुर्ती पुण्य सागर जी एवं अन्य सौ से अधिक मुनी, त्यागियों के सान्निध्य प्राप्त होना अपने आप में परम सौभाग्य है। क्षपक मुनीराज का परिवारजनों की और से 'पंचामृत अभिषेक' संपन्न किया गया, तीन परिक्रमा कर निखिलेश काला ने देह को अग्नी संस्कार देकर, अंतीम संस्कार संपन्न किया। १८ सितम्बर २०२२ आस्विन कृष्ण अष्टमी रविवार के शुभ दिन १ बजकर ११ मिनिट पर देह त्याग कर मोक्ष की और गमन कर दिया।

- एम.सी. जैन
९४२३१५०११६

भारत को केवल BHARAT ही बोलें INDIA नहीं
Varsha Cotton Co.
Cotton Merchants

Late Sri. Kachrulalji Abbad

Late Smt. Madanbai Abbad
H. No.: 12-10-97/31, Paras Garden, Gandhi Chowk, Raichur, Karnataka, Bharat-584101, Ph.: Res. 08532-230478
SAMPAT TRADERS Best Quality & Best Price Is Our Motto
Plot No.4, Shop No. 32, 1st Floor, Rajendra Gunj, Raichur, Karnataka, Bharat-584102
Kishore Kumar Mob. 9448370478
Goutam Kumar Mob. 8088812121
Prakash Chand Mob. 9342722122

श्री सिवान्ची ओसवाल जैन संघ, मदुरै द्वारा दीपावाली स्नेह मिलन मनाया गया

मदुरैः अलगरकोविल रोड में श्री सिवांची ओसवाल जैन संघ मदुरै का दीपावाली एवं वार्षिक स्नेह मिलन का भव्य आयोजन हुआ। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ, कार्यक्रम में (तप अभिनंदन) पिछले वर्ष के दौरान, मासखमन तप, वर्षी तप, सिद्धितप, उपधान तप,८१ आयम्बिल, अठाई तप और इससे अधिक तपस्या करने वाले तपस्यार्थिओ का बहुमान किया गया। मेधावी छात्र-छात्राओं का बहुमान यानी दसवीं एवं बारहवीं कक्षा में सन् २०२२ में ९५% अंकों से उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। प्रति वर्ष की तरह कई विभिन्न प्रतियोगिताएँ भी रखी गयी, जिसमें सभी ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

दीपावली स्नेह मिलन २०२२ के सम्पूर्ण कार्यक्रम के लाभार्थी परिवार शा जुगराजजी, रमेशकुमारजी, उत्तमचंदजी, महेन्द्रजी, बेटापोता शा जुगराजजी ताराचंदजी छाजेड़ परिवार मरुधर में गढ़सिवाणा (फर्म : रमेश लॉक हाऊस मदुरै) का श्री सिवांची ओसवाल जैन संघ के अध्यक्ष मूलचंद श्रीश्रीमाल, मंत्री कांतिलाल बालड़, उम्मेदमल ग़ोलेछा, बगदराज बागरेचा आदि पदाधिकारियों ने सम्मान किया गया।

प्रात: ९ बजे से शाम ६ बजे तक कार्यक्रम चला, जिसमे सभी ने हर तरीके से मिलजुल कर खुब आनंद लिया। व्यवस्था में सभी सदस्यों का सक्रिय सहयोग रहा। सिवांची ओसवाल जैन संघ के अध्यक्ष मूलचंद श्रीश्रीमाल ने सभी आगुंतकों का स्वागत किया, मन्त्री कांतिलाल बालड़ ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। संपूर्ण कार्यक्रम के लाभार्थी जुगराज छाजेड़ ने कार्यक्रम सभी का खुब खुब आभार जताया। कार्यक्रम का कुशल संचालन ललित गोलेछा एवं महावीर श्रीश्रीमाल ने संयुक्त रूप से किया। उक्त जानकारी जयंतीलाल कांकरिया एवं अशोक जीरावला ने एक प्रेस विज्ञप्ति द्वारा 'जिनागम' को दी है।

SHOP NO. 2, 3 & 4, SHREE AKANKSHA CO-OP. HOUSING SOCIETY LTD. RAVI INDUSTRIES COMPOUND, PANCHPAKADI, THANE (W) | M: 7045789963

BIKAJI RETAIL SHOWROOMS: Malad (W): Bikaji Food Junxon M: 7045789962, 7777084455 • **Malad (E): M:** 9320201995, 8097059366 • **Goregaon (E): T:** 022-28406700, **M:** 9321362383 • **Andheri (W): Laxmi Indl. Est. T:** 022-61668737, **M:** 7045789968, **Lokhandwala M:** 8591073576, 9967428772 • **Khar (W): M:** 9892551163 • **Mira Road (E): Shanti Nagar T:** 022-65696299, **M:** 9594696299, **Kanakia M:** 9323404140, 9619890853 • **Bhayandar (W): Opp. Maxus Mall M:** 9323404140, 9769691030 • **60 Feet Road M:** 9930630506, 9867853149, 9537333251 • **Bhayandar (E): M:** 9619112244, 9082952106 • **Thane (W): M:** 7045789963

Bikaji Showroom Manager (Mumbai): Gopal Agarwal, M: 7045789957

For Home Delivery
Scan the QR Code to order now

www.bikaji.com | Follow us on:

BHUJIA • NAMKEEN • SWEETS • SNACKS • PAPAD

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

विशाखापट्टनम में मंगल भावना समारोह सम्पन्न

विशाखापट्टनम: तेरापंथ भवन में दिंनाक ८ अक्टूबर को युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि श्री दीप कुमार जी सहवर्ती संत बालमुनि श्री काव्य कुमार जी का मंगल भावना समारोह एवं मुनि श्री दीप कुमार जी द्वारा लिखित पुस्तक 'प्रतिभा और पुरुषार्थ के संगम-मुनि राकेश' भेंट समारोह भी आयोजन जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा विशाखापट्टनम द्वारा हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसदश्री जी बी एल नरसिम्मन राव जी उपस्थित थे।

मुनि श्री दीप कुमार जी ने कहा मंगल भावना समारोह प्रमोद भावना का प्रतीक है। संतो के प्रति मंगल भावना कर रहे हैं आप हमारे प्रति करते हैं हम आपके प्रति, सबके प्रति मंगल भावना के फूल चढ़ाए। गुरु कृपा से विशाखापट्टनम चतुर्मास करने आए और प्रस्थान का समय आ गया। विशाखापट्टनम अच्छा क्षेत्र है। हम सौभाग्यशाली हैं ऐसा संघ और ऐसे गुरु मिले हमारे गुरु आचार्य श्री महाश्रमण जी तो इस कलयुग में सतयुग के अवतार है। गुरु कृपा से चतुर्मास अच्छा रहा। अच्छा व्यखान तपस्याए हुई एवं मासखमन भी हुआ। मुनि काव्य कुमार जी का बहुत श्रम रहा गोचरी आदि में।

यहां की तेरापंथ सभा, युवक परिषद, महिला मंडल, टी .पी. एफ सभाओं की सेवा मिली। सभा का मुख्य योगदान रहा। चंपालाल जी डूंगरवाल अध्यक्ष जी ने बहुत ही निष्ठा से अपना दायित्व संभाला।

मुनि श्री ने अनेको श्रावक-श्राविकाओं का उल्लेख करते हुए झब्बरमल बुच्चा, हिम्मत भरत हीरावत, विनीत गोलछा, विमल कुंडलिया, पीयूष बांठिया, अरुण तरुण सुराणा, विजय सिंह दसानी, मनीष डागा, चंद्रकांत पारख, विनोद बैद आदि की सेवाओं का उल्लेख किया।

मुनि श्री ने स्वयं द्वारा लिखित पुस्तक के संदर्भ में कहा 'प्रतिभा और पुरुषार्थ के संगम-मुनि श्री राकेश'बहुत प्रेरक है। शासन गौरव मुनि श्री राकेश कुमार जी प्रतिभा और पुरुषार्थ के अद्भुत संगम थे। हमारे धर्म संघ के विशिष्ट संत थे। गुरुओं के कृपा पात्र थे। तीन-तीन अलंकरण उन्हें प्राप्त हुए। साहित्यकार, कुशल वक्ता थे। मुझे मुनि श्री के सानिध्य में रहने का १३ वर्ष अवसर मिला। मुनि श्री मेरे परम उपकारी हैं। यह ग्रंथ गुरु कृपा से आया है। संत साहित्य समिति की स्वीकृति से संभव हुआ इस कार्य में निर्मल बैंगानी का बहुत योगदान रहा।

यहां विशाखा में ऋषभ सुराणा ने बहुत समय और श्रम लगाया। संवाद सेतु का कार्य किया। मुख्य अतिथि जीवीएल नरसिम्हा राव ने कहा-ग्रंथ का प्रकाशन अभिनंदनीय है। ऐसे संतों का जीवन संदेशमय होता है। मुझे मुनि श्री दीप कुमार जी का दूसरी बार दर्शन करने का सौभाग्य मिला है। बाल मुनि काव्य कुमार जी ने कहा-गुरु कृपा से प्रथम बार अठाई करने का अवसर मुझे यहां मिला। अच्छा ज्ञान ध्यान हुआ।

कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष चंपालाल जी डूंगरवाल, ते.यु.प अध्यक्ष राजेश जी सुराणा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा वंदना जी विनायकिया, टी.पी.एफ अध्यक्षा प्रेक्षा नाहटा, अ.भा.ते.यु.प सदस्य ऋषभ सुराणा, महासभा प्रभारी विमल जी कुंडलिया, संदीप जी सेठिया विनोद देवी भंसाली, प्रमिला जी हीरावत, बसंती देवी दसानी उपाध्यक्ष विनोद बैद आदि ने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण और गीत का संगान किया। संचालन श्रीमती निशा कुंडलिया ने किया।

जैन पत्रकार महासंघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी घोषित

जयपुर: जैन पत्रकार महासंघ (रजि) के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश तिजारिया जैन ने आगामी कार्यकाल के लिए राष्ट्रीय कार्यकारिणी की घोषणा की है। जैन पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन जयपुर ने 'f-जनागम' को अवगत कराया कि राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर डॉ अनिल कुमार जैन जयपुर, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर राजेंद्र जैन महावीर सनावद (मध्य प्रदेश), राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री अकलेश जैन अजमेर, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री सुनील जैन संचय ललितपुर (उत्तर प्रदेश), राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष पद पर दिलीप जैन जयपुर, राष्ट्रीय मंत्री राकेश जैन चपलमन कोय, राष्ट्रीय मंत्री डॉ. प्रगति जैन इंदौर, राष्ट्रीय मंत्री नितिन कुमार जैन (वैद्य) मलकापुर (महाराष्ट्र), राष्ट्रीय संगठन मंत्री मनीष जैन विद्यार्थी शाहगढ़ (मध्यप्रदेश), राष्ट्रीय प्रचार मंत्री महेंद्र कुमार जैन बैणठी जयपुर, राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री संजय जैन बड़जात्या कामां, भरतपुर, राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री नीरज जैन दिल्ली, राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री चंपालाल छाजेड़ सूरत (गुजरात)। इसी के साथ जिला संयोजक

बेंगलुरु कर्नाटक के पद पर श्री गौतम ओस्तवाल बेंगलुरु (कर्नाटक) को मनोनीत किया है। राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने अवगत कराया है कि देश के २५ जिलों में जिला संयोजक जैन संस्कृति एवं पत्रकारों के हित में कार्य कर रहे हैं।

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

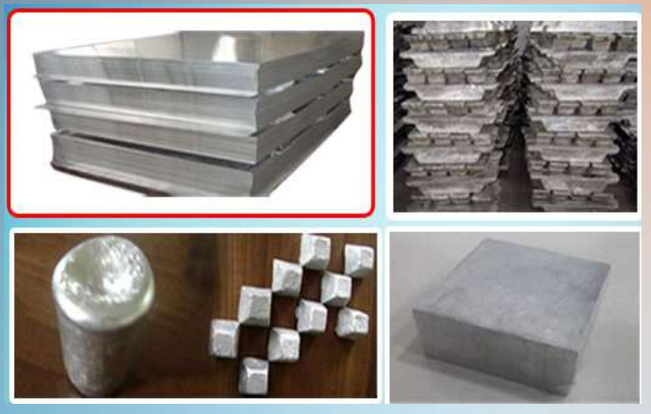

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

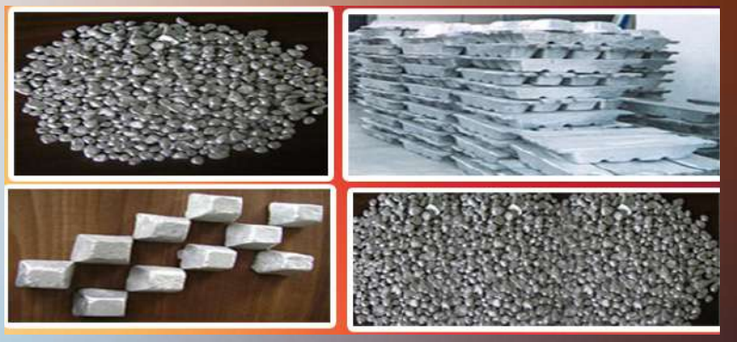

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ में ज्ञान पंचमी की आराधना हुई

राजगढ़ (धार): श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर पेढी ट्रस्ट श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ के तत्वाधान में प.पू. गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न मुनिराज श्री जीतचन्द्रविजयजी म.सा., वरिष्ठ साध्वी श्री किरणप्रभाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री प्रमितगुणाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विमलयशाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावनतम निश्रा में दीपावली पंचान्हिका महोत्सव के अंतिम दिन ज्ञान पंचमी की आराधना श्री यतीन्द्रसूरि चौक में हुई, जिसमें आराधकों ने ५१ स्वस्तिक बनाकर ५१ लोगस्स का काउस्सग करके ५१ खमासने देते हुए ५१ प्रदक्षिणा देकर ५१ फल चढ़ाकर ५१ नैवेध्य अर्पित किये व ओम हीं नमो नाणस्य मंत्र का जाप किया। आराधना में बड़ी संख्या में आराधकों ने मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान व केवलज्ञान की आराधना की। दीपावली पंचान्हिका महामहोत्सव मेले के लाभार्थी श्री बाबुलालजी डोडियागांधी परिवार ने प्रभु श्री आदिनाथ भगवान व दादा गुरुदेव की पूजा अर्चना की। महोत्सव का आयोजन श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर पेढ़ी ट्रस्ट मोहनखेड़ा के तत्वाधान में हुआ।

निर्माण परियोजना का उद्घाटन सुशिला पुगलिया ने किया

Aid To Assisting Hands

कोलकाता: अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार निर्माणः परियोजना के अंतर्गत प्रोजेक्ट Aid To Assisting Hands का 'द्वितीय चरण' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ महासभा की ट्रस्टी श्रीमती सुशीला पुगलिया जो कि भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए के आह्वानकर्ता मैं भारत हूँ फाउंडेशन की पूर्वांचल उपसभापति हैं ने नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया। अध्यक्ष श्रीमती अनीता सुराना ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता रहे अध्यापिका सम्माननीय सुमन जेटली, निवर्तमान अध्यक्ष श्रीमती संगीता सेखानी द्वारा मुख्य वक्ता का सम्मान किया गया। मुख्य वक्ता का परिचय श्रीमती सरला बरड़िया ने दिया। मुख्य वक्ता ने होम हेल्पर्ज एवं बेटियों को शिक्षा का प्रशिक्षण देते हुए स्वास्थ्य एवं सफाई के लाभ बतलाए एवं उसकी अहमियतता के बारे में समझाया। आदर्श हिंदी विद्यालय के प्रिन्सिपल तिवारी एवं अध्यापक बनारसी सर ने अपने वक्तव्य में केंद्र द्वारा निर्देशित निर्माण परियोजना की सरहाना की। कार्यक्रम में साउथ कोलकाता महिला मंडल के पदाधिकारी, अभातेममं की एसोसिएट सदस्य श्रीमती संगीता बाफना व सदस्य बहनें उपस्थित रही। निर्माण परियोजना के अंतर्गत होम हेल्पर्ज़ के बच्चों को पढ़ाना शिक्षित करना और बेटी पढ़ाओ के मिशन को भी पूरा किया गया। ऐसी २५ बेटियाँ जो आदर्श हिंदी विद्यालय हाई स्कूल की कक्षा ६,७ एवं ८ में पढ़ती हैं उन्हें सालाना शैक्षणिक शुल्क साउथ कोलकाता महिला मंडल द्वारा प्रायेजित किया गया।

Vocational Training के अंतर्गत ६ बेटियों को साल भर का कंप्यूटर कोर्स शुल्क तथा २४ बेटियों को सिलाई प्रशिक्षण का एक वर्षीय कोर्स शुरू कराया गया, जिससे बेटियाँ लाभान्वित होंगी एवं आत्मनिर्भर बनेगी। कार्यक्रम का कुशल संचालन रा.का.स. वह साउथ कोलकाता मंत्री श्रीमती बबीता भुतोड़िया वह आभार ज्ञापन रा.का.स. व साउथ कोलकाता सहमंत्री श्रीमती अनुपमा नाहटा द्वारा किया गया, सभी उदारमना बहनों के सहयोग से कार्यक्रम सफल रहा।

घोड़ावत व कटारिया को हुए सम्मानित

संजय घोड़ावत

पुष्पा कटारिया

पुणे: जय आनंद ग्रुप द्वारा इस वर्ष का समाजभूषण पुरस्कार उद्यमी संजय घोड़ाबत (जयसिंगपुर) को दिया गया। वहीं पुष्पा महावीर कटारिया (पुणे) को जय आनंद मानव सेवा पुरस्कार प्रदान किया गया। यह जानकारी ग्रुप के सचिव गणेश कटारिया ने 'जिनागम' को दी है।

इन दोनों पुरस्कारों का वितरण भारतीय जैन संगठन के संस्थापक अध्यक्ष शांतिलाल मुथ्था तथा विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय उपाध्यक्ष हुकुमचंद सांवला के हाथों किया गया। जेडएफ स्टीयरिंग गियर इंडिया लिमिटेड के चेयरमैन दिनेश मुनोत की अध्यक्षता में कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम रविवार ६ अक्टूबर की सुबह १०.३० बजे सातारा रोड स्थित लोकशाहीर अन्नाभाऊ साठे सभागार में हुआ। संजय घोड़ावत ने कई क्षेत्रों में एक उद्यमी के रूप में ख्याति अर्जित की है, उनके संजय घोड़ावत ग्रुप ने व्यवसाय के साथ-साथ सामाजिक उद्यम के माध्यम से लोक कल्याण के आदर्श को आगे बढ़ाया है, जबकि पुष्पा महावीर कटारिया व्यापारियों की अग्रणी संगठन CAIT की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं, इसके साथ ही उनके पास सेवा सिद्धि फाउंडेशन के अध्यक्ष के रूप में जिम्मेदारी भी है।

मुमुक्षु श्रद्धा लुंकड़ भागवती दीक्षा ११ दिसंबर को जयपुर में होगी

जयपुरः श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ द्वारा मुमुक्षु श्रद्धा लुंकड़ का जैन भागवती दीक्षा के उपलक्ष में भव्य अभिनंदन किया गया। श्री खरतरगच्छ संघ भवन में आयोजित अभिनंदन समारोह में साध्वी श्री ने संयम की महत्ता दर्शाते हुए जीवन में शाश्वत सुखों को प्राप्त करने के लिए देव गुरु धर्म की शरण स्वीकार कर समर्पित भाव से ज्ञान दर्शन चरित्र की आराधना करने से लक्ष्य को प्राप्त करने की बात कही एवं मुमुक्षु श्रद्धा लुंकड परिवार से पूर्व में आचार्य श्री जिनमणि प्रभ सुरीश्वर जी महाराज की दीक्षा का उल्लेख किया था। मुमुक्षु श्रद्धा ने कहा कि मुझे बचपन में ही माता-पिता, परिवार एवं गुरु-गुरुणी जी से संयम के संस्कार मिले एवं परमात्मा की असीम कृपा से वह दिन भी आ रहा है जब मैं संयम अंगीकार कर तीर्थंकर महावीर के पथ पर अग्रसर होने के लिए आचार्य श्री के चरणों में समर्पित होने जा रही हूं। श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ के अध्यक्ष अमृत सिंघवी ने संघ की ओर से मुमुक्षु के प्रति मंगल भावना व्यक्त की, इस अवसर पर नगर परिषद सभापति सुमित्रा जैन, श्री ओसवाल समाज अध्यक्ष शांतिलाल डागा ने मुमुक्षु श्रद्धा लुंकड़ के प्रति मंगल भावना

व्यक्त की। मुमुक्षु श्रद्धा लुंकड़ के वीर पिता रमेश कुमार ने कहा कि हमारे परिवार का परम सौभाग्य है कि हमारे कुल मोकलसर से ६ भागवती दीक्षा हुयी। आचार्य श्री हमारे परिवार के ही कोहीनूर रत्न हैं, हमारे परिवार से यह ६ वीं दीक्षा होने जा रही है। कार्यक्रम संचालक ओमप्रकाश बांठिया ने अणगार जीवन के बारे में महता दर्शाते हुए कहा कि आचार्य श्री जिन मणिप्रभ सुरीश्वर जी महाराज साहब के मंगल सानिध्य में ११ दिसंबर को मुमुक्षु बहन की जयपुर में जैन भागवती दीक्षा होगी। समारोह में खरतर संघ के साथ ही युवा संघ महिला मंडल ओसवाल समाज तपागच्छ समाज, स्थानकवासी समाज तेरापंथ समाज के सदस्यों ने भी मुमुक्षु श्रद्धा का अभिनंदन किया। समारोह में मुमुक्षु बहन के साथ ही वीर पिता रमेश कुमार लुंकड़ का भी साफा पहना कर अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में गणपत चंद पटवारी, ओसवाल समाज के मंत्री महेंद्र वेद, समिति संयोजक तनसुख हुंडिया, पदाधिकारी ओम प्रकाश दांती, मूलचंद महाजन शांतिलाल चौकसी, बाबूलाल शराफ, महावीर चोपड़ा, रणजीत क्वाड, अभिषेक गोलेछा सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

श्री सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी दिगम्बर जैन देवस्थान

मु. पो. मांगीतुंगीजी तहसील सटाणा जि. नाशिक, महाराष्ट्र, भारत-423302

भ्रमणध्वनि : 7588711766/ 9422754603

श्री १००८ विश्वहितंकर सामीशय चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान की एक दिन की शांतिधारा मात्र २१२१ रूपये।
शनिग्रह निवारक मुनीसुव्रतनाथ भगवान की शांतिधारा ११११/- शनिवार के दिन
नुतन धर्मशाला में रूम डेकोरेशन हेतु १,५१,१११/- रूम के अदर नाम ज्ञायेगा
क्षेत्र आपका है फार्म भरकर देवें या भिजवायें। धन्यवाद

Mail id: mangitungi.1008@gmail.com
For Room Booking - mangitungi.org

● आहारदान व भोजनलय फण्ड ●
अगर भक्त अपनी तरफ से साधु संघ हेतु स्थायी रूप से चौका चलाना चाहे तो संपर्क करे। क्षेत्रपर नगापुर दि.जैन समाज के नाम से भोजनालय चल रहा है। भोजनालय स्थायी रूप से चले इसलिये स्थायी फंड हेतु १५,१११ रू देकर सहयोगी बने। भोजन हॉल में मार्बल बोर्ड पर नाम आयेगा। ३६५ मेंगर की आवश्यकता है। यदि कोई दानदाता विना मूल्य भोजनालय चलाना चाहे तो संपर्क कर सकते है।

श्री मांगीतुगी क्षेत्र विकास योजना

एक महिने का जलपान २१,१११/-	पहाड जिर्णोद्धार ११,१११/-
भोजनालाय स्थायी फंड १५,१११/-	पूजन स्थायी फंड ११,१११/-
औषध दान फंड ११,१११/-	आहार दान फंड २५,१११/-
जलपान स्थायी फंड १५,१११/-	पहाड पूजन १,१२५/-
पार्श्वनाथ पूजन ५५१/-	मुनिसुव्रतनाथ पूजन ५५१/-
एक दिन का जलपान ११११/-	अखंड ज्योत ५५१/-

ऑनलाईन राशि भेजने की जानकारी

खाता का नाम- श्री सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी दि. जैन देवस्थान
बैंक का नाम - बैंक ऑफ बडोदा शाखा ताहाराबाद
खाता नबंर - करंट अकाउन्ट है- 89100200000177
IFSC Dode - BARB0DBTAHA

मै, श्री मांगीतुगीजी जैन सिद्धक्षेत्र के विकास हेतु प्रतिज्ञा करता हुँ कि में प्रतिदिन..... रूपया निकालता रहूंगा प्रतिवर्ष दानराशी भेजता रहूगा।
यह प्रतिज्ञा लेकर में अपने आपको धन्यभागी मानता हूँ।
मेरा नाम व पता इस प्रकार है।

निवेदकः- श्री सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी दिगम्बर जैन देवस्थान

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

कर्नाटका उत्तर भारतीय विकास सेवा संघ, बेंगलूरू एवं सर्वजन एकता मंच के संयुक्त तत्वावधान में सुदामा नगर स्थित तेलुगू चठियर कल्याण मंडप में आयोजित माँ भगवती के विशाल दुर्गा जागरण महोत्सव में देवी माँ को चुनरी अर्पण करते हुए मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी महेन्द्र मुणोत दंपत्ति, साथ में मंच के अध्यक्ष राकेश शुक्ला एवं अन्य पदाधिकारी।

कर्नाटका डाक कर्मचारी संघ द्वारा डाक सप्ताह के अंतिम दिन बेंगलूरु के गाँधी भवन में आयोजित डाक कर्मचारी साहित्य सम्मेलन में मुख्य अतिथि चीफ पोस्ट मास्टर जनरल कर्नाटका राजेंद्र कुमार ने अपने वक्तव्य में कहा कि, ''डाक विभाग जनसंपर्क का सबसे विश्वसनीय सेतु है। कन्नड़ साहित्य परिषद अध्यक्ष महेश जोशी ने पोस्ट विभाग द्वारा कन्नड़ साहित्य सम्मेलन आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की। विशिष्ट अतिथि युवा समाज सेवी श्री महेन्द्रजी मुणोत ने अपने वक्तव्य में कहा कि, ''कोरोना संकट के समय डाक विभाग की सेवाएं प्रशंसनीय रहीं।' सम्मेलन अध्यक्ष इंदिरा ने डाक विभाग की व्यापक सेवाओं के बारे में बताया। इस अवसर पर निष्ठावान डाक कर्मियों का सम्मान किया गया।

माँ दुर्गा पूजा समिति ट्रस्ट, आन्द्राहल्ली, मागड़ी रोड द्वारा आयोजित दशहरा महोत्सव के पावन प्रसंग पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने पहुंच कर माँ दुर्गा की पूजा-आरती की। बिहार से आए हुए भजन कलाकार दिलीप वर्मा, अनिल सिंह, संजना राज ने अपनी प्रस्तुतियों से वातावरण को भक्तिमय बना दिया। जनसमूह द्वारा 'जय माता दी' के उद्घोष के साथ श्रद्धालु झूम उठे। मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी महेन्द्र मुणोत की अपील पर श्रद्धालुओं ने लंपी वायरस से पीड़ित गोवंश के लिए विशेष प्रार्थना की। ट्रस्ट के संजय मिश्रा, रामसेवक सिंह, सुनील तिवारी, रामधनी गुप्ता, पी.एस. पांडे ने अतिथियों को सम्मानित किया।

मुख्य अतिथि महेंद्र मुनोत ने यजमान विष्णुवर्धन पंखे संघ लागेरे द्वारा आयोजित १३वीं वर्षगांठ कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर किया, इस अवसर पर जरूरतमंदों के लिए भोजन दान कार्यक्रम, रक्तदान कार्यक्रम, नोटबुक वितरण, साड़ी वितरण सेवाएं की गईं। युवाओं ने उत्साहपूर्वक किया रक्तदान, मेडिस्कोप ब्लड बैंक के माध्यम से रक्त एकत्रित किया गया। संघ अध्यक्ष अशोक वर्धन ने मुनोत जी को सम्मानित किया।

युवा शाखा ने जीवदया और मानव सेवा कर मनाई गुरु गणेश की जन्म जयंती

चेन्नईः श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली तथा तमिलनाडु प्रांतीय शाखा के मार्गदर्शन में तमिलनाडु युवा कॉन्फ्रेंस द्वारा संचालित मासिक जीवदया एवं मानव सेवा श्रृंखला के तहत गुरु गणेशलाल की ४३वीं जन्म जयंती के अवसर पर महावीरचंद राजेशकुमार कटारिया परिवार, ट्रिप्लीकेन के सहयोग से अयनावरम स्थित पिंजरापोल में गायों को हरा चारा इत्यादि खिलाया गया।

मानव कल्याण के लिए आरवाईए कॉस्मो फाउंडेशन के अयनावरम स्थित चिकित्सालय में संतोषकुमार, दर्शन, यश पगारिया पुरुषवाक्कम के सहयोग से एक दिन की दवाई का अनुदान प्रदान किया गया, बाद में संस्था के सभी सदस्यों ने कांतिमुनि एवं साध्वी सिद्धिसुधा व अन्य साध्वीबृंद के दर्शन वंदन का लाभ लिया, इन सेवा कार्यों में प्रांतीय युवा शाखा के मार्गदर्शक हरीश खारीवाल, अध्यक्ष आनंद बालेचा, विमल खाबिया, संतोष पगारिया, नवीन खारीवाल, शांतिलाल गुगलिया, राजेश लुणावत, संजय सेठिया, शांतिलाल रांका, धर्मेंद्र सिसोदिया, विशाल खाबिया, पीयूष बम्ब, दिनेश नाहर व यश पगारिया का सहयोग रहा।

जय भारत! जय जिनेन्द्र! जिनागम

भारत को भारत ही बोलें इंडिया नहीं **Remove INDIA Name From The Constitution**

सुभाषचंद रांका जैन
संस्थापक चीफ पैटर्न जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गनाइजेशन
जैतारण निवासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९३८४६०२८५४

सुभाषचंद जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि आज हमारा समाज कहीं पंथों में बंटा हुआ है, चाहे मंदिर मार्गी हो (मूर्तिपूजक) को या स्थानकवासी श्वेताम्बर और दिगम्बर सभी को एक साथ-एक मंच पर आना होगा, तभी 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है। सर्वप्रथम हर पंथ के साधु-संतों, गुरु-भगवंतों को एक साथ-एक मंच पर आने की आवश्यकता है, उनके द्वारा ही 'जैन एकता' संभव हो सकती है, भले ही हमारी तिथियां अलग-अलग हों, हमारे पूजा विधान अलग-अलग हों पर सभी के मूल में तीर्थंकर महावीर स्वामी ही हैं और उनके बताए गए सिद्धांत ही हम अपना रहे हैं, अतः सामाजिक स्तर पर हमें एक साथ आना ही चाहिए। हमारे पर्व एक साथ-एक ही समय पर मनाया जाना चाहिए तभी तो जैन समाज के महत्व व विशेषताओं के बारे में अन्य धर्म व समाज के लोग जानेंगे। हमारे जितने भी सामाजिक संगठन हैं उनमें जो वरिष्ठ पदाधिकारी हैं उनको इस दिशा में विशेष प्रयास करने की आवश्यकता है तभी 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है।

आज का युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से जुड़ा हुआ है, पर वह पूर्ण रूप से नहीं जुड़ा है, आधुनिक शिक्षा प्रणाली के कारण वह अपने जीवन शैली में इतना व्यस्त है। विशेषकर जैन समाज द्वारा निर्मित जैन शिक्षण संस्थानों में एक विषय तो जैन आगम पर अवश्य होना चाहिए, जिससे हमारी आने वाली पीढ़ी भी अपने धर्म और समाज के महत्व को समझे और जाने, हमारे गुरु भगवंतों से भी मेरा यही निवेदन है कि वह अन्य धर्मों पर कटाक्ष करने से उत्तम है अपने धर्म की अधिक से अधिक महिमा का वर्णन करें। धर्म की महिमा अनोखी होती है जिससे युवा वर्ग भी अपने धर्म और समाज से जुड़ेगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि 'भारत' ही अपने देश का मूल नाम है और एक ही नाम से हमारी पहचान होनी चाहिए, भले ही आज हमारे देश को इंडिया नाम से संबोधित किया जाता है और यह अंग्रेजों द्वारा इंडस वैली से लिया गया है पर हमारी पहचान तो भारत से है और भारत ही रहनी चाहिए। वर्तमान की मोदी सरकार से यह उम्मीद हम कर सकते हैं कि वे इस दिशा में अवश्य प्रयास करेंगे।

सुभाषचंद जी मूलतः राजस्थान के पाली जिले में स्थित जैतारण के निवासी हैं। आपका जन्म १९४६ को पुणे में और संपूर्ण शिक्षा चेन्नई में संपन्न हुई है। यहां आपका परिवार लगभग १२० वर्षों से बसा हुआ है। यहां ऑटोमोबाइल व वितरण व्यवसाय से जुड़े हैं। पिछले ४० वर्षों से सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय हैं। आपके समाज सेवा क्षेत्र के कार्यों को देखते हुए राजस्थानी एसोसिएशन तमिलनाडु द्वारा २०२२ में 'राजस्थान रत्न' से आपको सम्मानित किया गया, साथ ही आप कई सामाजिक संस्था से भी जुड़े हुए हैं, विशेषकर आप शिक्षा व समाज कार्य में सक्रिय हैं। एमएनएम जैन इंजिनियरिंग एंड आर्किटेक कॉलेज के पूर्व फायनेन्स डायरेक्टर, महावीर राजस्थानी इंटरनॅशनल स्कूल के उपाध्यक्ष के रूप में कार्यरत है। श्री जैन महावीर इंटरनेशनल मिशन व श्री जैन सहायक समिति के ट्रस्टी के रूप में कार्यरत हैं। डीबी जैन कॉलेज के काउंसिल मेंबर हैं। वर्ल्ड वेज काउंसिल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में भी अपनी भूमिकाएं निभाई है साथ ही आप गौशाला व अन्य कई सामाजिक संगठनों में भी अपनी सहायता प्रदान करते रहते हैं। आपके पिता संघवी सेठ कन्हैया लाल जी भी समाजसेवी रहे, जिन्हें राजस्थान सरकार द्वारा १९९५ में भामाशाह व महिमा प्रभ सागरजी द्वारा 'संघवी' की उपाधि प्रदान की गई।

सुभाष जी बताते है कि 'मेरे परिवार में दादा सेठ ऋषभदास रांका स्वाधीनता सेनानी थे। आजादी के आंदोलन में वे जेल भी गए। उनके अलावा मौसेरे भाई कृष्णराज मेहता आचार्य विनोबा भावे के आंदोलन से सक्रिय रूप से जुड़े रहे। आजाद हिंद फौज के संस्थापक सुभाषचंद्र बोस की वजह से ही मेरा नाम 'सुभाष' रखा गया।' जय भारत!

'जिनागम' समस्त जैनों की एकमात्र पत्रिका है इसे पढें व अन्यों को भी पढायें...

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!!

शाः बाबुलाल धनराजजी डोडीया गांधी जैन

ट्रस्टी श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ मोहनखेड़ा

घुम्बड़िया निवासी-अहमदाबाद प्रवासी

जैन धर्म की प्रभावना करने, गुरूगच्छ की महिमा बढ़ाने वाले व समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाएं देने वाले बाबुलाल धनराजजी डोडिया गांधी का नाम जैन जगत में विशेष सम्मान के साथ लिया जाता है। बाबुलाल जी का जन्म और संपूर्ण शिक्षा राजस्थान के जालौर जिले में स्थित घुम्बड़िया गांव में संपन्न हुयी। पिछले ६० सालों से आप अहमदाबाद में बसे हुए हैं और स्टेशनरी के कारोबार के साथ एलुमिनियम इंडस्ट्रीज से जुड़े हैं। आपका संयुक्त परिवार है, आपके २ पुत्र हैं। कारोबार के साथ-साथ आप सामाजिक कार्य में भी विशेष रुचि रखते हैं, अत: कई सामाजिक संस्था में विशेष पदों पर सेवारत हैं। श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ के ट्रस्टी, श्री राजेंद्र जैन भवन ट्रस्ट पालीताणा के मैनेजिंग ट्रस्टी, श्री राजेंद्र विद्या धाम सरोड पालीताणा के ट्रस्टी, श्री शंखेश्वर पुरम बदनावर के ट्रस्टी, श्री काया मंदिर उदयपुर के कोषाध्यक्ष के रूप में सेवारत हैं, त्रिस्तुतीक जैन संघ (गुजरात) के अध्यक्ष व अन्य कई संस्थाओं और ट्रस्टों से भी जुड़े हैं।

मोहनखेड़ा महातीर्थ में कार्तिक सुदी १ से पॉचम तक, पांचों दिन का सम्पूर्ण स्वामी वात्सल्य का लाभ आप लेते हैं। पालिताणा श्री राजेंद्र भवन में स्व द्रव्य से धर्मशाला का निर्माण भी आप करवा रहे है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, क्योंकि सम्राट भरत के नाम से हमारे देश का नाम 'भारत' पड़ा था और यह आदिकाल से चला आ रहा है। यही हमारी वास्तविक पहचान है। इंडिया नाम तो अंग्रेजों द्वारा थोपा गया है जो गुलामी का प्रतीक है, अतः अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए। जय भारत!

कैलाशमल्ल दुगड़ जैन

राष्ट्रीय अध्यक्ष करुणा इंटरनेशनल

जोधपुर निवासी-चेन्नई प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९८४१००८५८५

कैलाशमल्ल जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि जैन समाज में एकता की बहुत आवश्यकता है, क्योंकि जैन समाज अल्पसंख्यक में गिना जाता हैं, चूंकि हम अल्पसंख्यक है इसलिए हमारी आवाज की कोई सुनवाई नहीं होती। और हमारी ताकत भी कम हो जाती है। दूसरी प्रमुख वजह यह है कि हमारे आपस में ही विरोधाभाव रखते हैं, हमारी शक्ति एक दूसरें के विचारों को काटने में ही चली जाती है, इसीलिए 'जैन एकता' आवश्यक है। इसमें सबसे बड़ी भूमिका श्रावकों की है, हमारे विधि-विधान, पूजा पद्धति अलग-अलग हो सकते हैं पर हमारे मूल सिद्धांतों के साथ तीर्थंकर महावीर के बताए मार्गो का ही हम अनुसरण करते हैं। हमारे धर्म आचार्य अलग-अलग हो सकते हैं, पर 'णमोकार' तो एक ही हैं। 'जैन एकता' के लिए मिलकर प्रयास करना चाहिए, जो परंपरा 'जैन एकता' के आड़े आती हो उसको छोड़ ही देना चाहिए, उसे विशेष महत्व नहीं देना चाहिए तभी 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है।

समाज का युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से विमुख होता हुआ दिखाई दे रहा है, क्योंकि समाज के गुरु-भगवंतों व वरिष्ठजनों की कथनी और करनी में अंतर होता है, उसमें कोई एकात्मता नहीं दिखाई देती, दूसरा हमारे रिचुअल सिद्धांत को जीवन में कैसे अपनाया जा सके उसका उचित मार्गदर्शन उन्हें प्राप्त नहीं हो रहा है, इसीलिए वह धर्म समाज से विमुख होते जा रहे हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अपने देश का एक ही मूल नाम है 'भारत', विश्व में किसी भी देश के २ नाम नहीं है तो हमारे देश को दो नामों से क्यों जाना जाता है, यह सर्वथा विसंगति है और इसे दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए। इंडिया नाम तो अंग्रेजों द्वारा थोपा गया है, जो सर्वथा अनुचित है अपनी पहचान भारत से है और भारत से ही रहनी चाहिए।

७९ वर्षीय कैलाशमल्ल जी का परिवार लगभग ९० वर्षो से चेन्नई में बसा हुआ है। आपका जन्म जोधपुर में वह संपूर्ण शिक्षा चेन्नई में संपन्न हुई है। यहां ऑटोमोबाइल, फाइनेंस व कॉस्मेटिक व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। आपके द्वारा १९६४ में अपने देश का सर्वप्रथम बुक बैंक स्थापित किया गया था, राजस्थानी यूथ एसोसिएशन चेन्नई के संस्थापक रहे हैं। चेन्नई में सर्वप्रथम जैन भवन के निर्माण में आपका पूर्ण सहयोग रहा, जिसके आप सचिव भी रहे हैं। महावीर निर्वाण महोत्सव १९७५ के भी सचिव पद पर अपनी भूमिका निभाई हैं। जैन मेडिकल रिलीफ सोसायटी के अध्यक्ष रहे हैं। राजस्थानी एजुकेशनल फाउंडेशन तमिलनाडु के भी अध्यक्ष रहे हैं। करुणा इंटरनेशनल विद्यालय में करुणा क्लब स्थापित कर विद्यार्थियों को अहिंसा, सदाचार, प्राणी प्रेम जैसे कई मौलिक तत्व से जोड़ने का कार्य किया है जिसके आप राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर सेवारत हैं, संस्था द्वारा पूरे भारत में २५०० विद्यालयों की स्थापना की गई है।

अजय सरावगी
पूर्व अध्यक्ष लायंस क्लब गुवाहाटी सिटी
चुरू निवासी-गुवाहाटी प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८६४७८५६९६

अजय जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि एकता चाहे जैन समाज की हो या अन्य समाज की, बहुत जरूरी होती है। एकता स्थापित होने से ही हमारा समाज आगे बढ़ सकता है, यदि समाज में एकता ना होगी तो समाज हमेशा ही पिछड़ा रहेगा, इसीलिए जैन समाज में एकता बहुत जरूरी है। समाज में फैले पंथवाद के कारण आज हम अपने मूल अस्तित्व को खोते जा रहे हैं, सभी अपना अपना राग अलापने में लगे हुए हैं जबकि भले ही सभी के मार्ग अलग-अलग रहें, पर सभी का लक्ष्य एक ही है। सभी के मूल में तीर्थंकर महावीर स्वामी के सिद्धांत ही हैं। 'जैन एकता' स्थापित करने के लिए सर्वप्रथम हमारे समाज के गुरुओं को एक साथ-एक मंच पर आने की आवश्यकता है और जिन मुद्दों पर हम एक हो सकते हैं उन मुद्दों पर अवश्य ही एक हो जाना चाहिए तभी 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है। जितने व्यक्ति उतने विचार, अपने विचारों को लागू करने के लिए नई संस्था या पंथ का निर्माण करना अपने अहंकार की पूर्ति करना है जिससे धर्म का ह्रास होता है। जबकि हमारा जैन धर्म आत्मा व मन की शुद्धि को प्रमुखता देता है और इसका पालन कर ही हम परम लक्ष्य को प्राप्त करते है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म व समाज से जुड़ी रही है और विमुख भी हो रही है। जैन धर्म के विधि-विधान कठिन है जिसे आज की युवा पीढ़ी नहीं अपना पा रही है, उन्हें सरल और आसान तरीका चाहिए, इसीलिए वर्तमान युवा पीढ़ी अपने समाज व धर्म से विमुख होती जा रही है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश की पहचान 'भारत' नाम से ही होनी चाहिए। नाम का कभी अनुवाद नहीं होता। भारत हमारे देश का ऐतिहासिक व प्राचीन नाम है और यही हमारी पहचान रहनी चाहिए।

अजय जी मूलतः राजस्थान स्थित 'चुरू' जिले के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'चूरू' में ही संपन्न हुई हैं। १९७७ में आप व्यवसाय निमित्त रंगिया आकर बस गए, तत्पश्चात १९८९ में आप ने गुवाहाटी में अपना स्पेयर पार्ट्स व्यवसाय प्रारंभ किया और तब से आप 'गुवाहाटी' में बसे हुए हैं, यहां आप कई सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय रहते हैं। लायंस क्लब के २ साल तक अध्यक्ष पद पर सेवारत रहे। मारवाड़ी सम्मेलन व मारवाड़ी युवा मंच से भी जुड़े रहे हैं। अग्रवाल दिगम्बर जैन समाज में भी सक्रिय हैं। जय भारत!

आसकरण कोचेटा
जिला अध्यक्ष भाजपा चेन्नई
बीलाडा निवासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८४०१३७२३०

आसकरण जी 'जैन एकता' के विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि 'जैन एकता' समाज की सबसे बड़ी जरूरत है और यह अवश्य स्थापित होनी चाहिए, क्योंकि एकता होने से ही हमारे महत्व व जैन धर्म को जाना और समझा जाएगा, हमारे बीच एकता ना होने के कारण ही आज हमारा समाज सामाजिक रूप से पिछड़ा हुआ है और इसके लिए सर्वप्रथम हमारे सभी पर्व चाहे संवत्सरी हो, पर्यूषण या अन्य कोई पर्व, एक साथ-एक ही रूप में मनाए जाने चाहिए, जिससे अन्य समाज के बीच भी हमारी एकता का संदेश जाए और साथ ही हमें अपने नाम के साथ या जाति के कॉलम में 'जैन' शब्द अवश्य लिखना चाहिए, जिससे हमारी वास्तविक संख्या का पता चल सके। इन कार्यों से हम 'जैन एकता' की ओर बढ़ सकते हैं।

आज का युवा वर्ग अपने धर्म समाज से विमुख होता दिखाई दे रहा है, अतः उन्हें समाज व धर्म से जोड़ने का मुख्य दायित्व समाज के वरिष्ठजनों व गुरु भगवंतों का ही है, वे सही मार्गदर्शन प्रदान करें तो अवश्य ही युवा वर्ग अपने धर्म समाज से जुड़ा रहेगा। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि आज हम बच्चों को उच्च शिक्षा देने के लिए बड़े-बड़े शिक्षण संस्थानों में डालते हैं, जहां उनके विचार व भाव बदलने लगते हैं, उन्हें उचित संस्कार मिले, इसका पूरा ध्यान परिवार व समाज जनों का ही है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम एक ही रहना चाहिए 'भारत' क्योंकि यह चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम से इस देश का नाम भारत रखा गया, यही हमारी संस्कृति व वेदों में भी वर्णित है अतः अपने देश का मूल नाम भारत है और भारत ही रहना चाहिए।

६९ वर्षीय आसकरण जी मूलतः राजस्थान स्थित जोधपुर के पास 'बिलाडा' के निवासी हैं। आपका परिवार लगभग १०० वर्षों से चेन्नई में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा चेन्नई में ही संपन्न हुई है। आप व्यवसाय में कार्यरत रहे पर पिछले ४० वर्षों से आप पूरी तरह से समाज सेवा में सक्रिय हैं। वासुपूज्य जैन संघ से जुड़े हैं, साथ ही भारतीय जैन संघटना व अल्पसंख्यक समिति के कार्यकारिणी सदस्य हैं। राजस्थानी तमिलनाडु एसोसिएशन से भी जुड़े हैं। खतरगच्छ संघ के सदस्य हैं। तमिलनाडु राजस्थानी प्रवासी एकता संघ व करुणा इंटरनेशनल से भी जुड़े हैं। चेन्नई जिले के भाजपा के अध्यक्ष के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

पवन कुमार जैन
अध्यक्ष पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर मोती कटरा
आगरा निवासी
भ्रमणध्वनि: ८१२६४५७१७१

पवन जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि आज के परिवेश में 'जैन एकता' की बहुत जरूरत है। जैन समाज की संख्या अधिक होने के बावजूद संख्या में कम गिने जाते हैं, क्योंकि हम अपने नाम के साथ 'जैन' शब्द का उपयोग बहुत ही कम करते हैं और इसका सबसे अधिक नुकसान हमारे समाज को ही भुगतना पड़ रहा है। हमारे जितने भी तीर्थ स्थान हैं, उन पर अन्य धर्म व समाज का प्रभुत्व बढ़ता जा रहा है, क्योंकि हमारे बीच में एकता नहीं है, अपने क्षेत्र की रक्षा हेतु हमें सामाजिक रूप से एकता का परिचय देना होगा, भले ही हमारे आमनाय पद्धतियां अलग-अलग हों, लेकिन सामाजिक और राष्ट्र स्तर पर हमें एक साथ ही जैन बनना होगा और धर्म को महत्व प्रदान करना होगा। आज जैन समाज को अल्पसंख्यक का दर्जा दिया गया है, इसके बावजूद अज्ञानता के कारण अल्पसंख्यक के जो लाभ हमें मिलने चाहिए वह नहीं मिल पा रहे हैं, क्योंकि हमारे समाज में एकता नहीं है, इसीलिए 'जैन एकता' जरूरी है। हमारे गुरु-भगवंतों को आपस में मिलकर इसके लिए प्रयास करना होगा। आज सोशल मीडिया का दौर है, हम इसी तरह बिखरे रहेंगे तो अन्य समाज के सम्मुख हमारे अलगाववाद का ही संदेश जाएगा, अतः हमें एक साथ एक होकर एक स्वर में आवाज़ उठानी होगी और यह सब 'जैन एकता' के द्वारा ही संभव है, इसीलिए 'जैन एकता' जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी अपने समाज से जुड़ भी रही है और विमुख भी हो रही है, कारण यह है कि उनकी जीवन शैली अलग है। पहले से हमारे समाज में लोग व्यवसाय में कार्यरत हैं, हम अन्य लोगों को नौकरियां देते रहे हैं पर आज हमारे बच्चे नौकरियां करने जाते हैं, क्योंकि यह व्यवसाय से अधिक आसान है और नौकरियों के चक्कर में उन्हें अपने धर्म और समाज से जुड़ने का अवसर नहीं मिल पाता, इसलिए वे समाज से अलग होते जा रहे हैं, इसीलिए उनके संस्कार भी छूटते जा रहे हैं। अपने धर्म व समाज के संस्कारों की रक्षा हेतु ही बचपन से ही समाज के बच्चों को जैन पाठशाला में डालना चाहिए, जिससे उनकी नींव मजबूत होगी और नींव मजबूत होगी तो वे चाहे विश्व में कहीं भी रहें, अपने मूल संस्कारों से जुड़े रहेंगे। आज हमारे देश से ज्यादा विदेशों में बस रहे जैन अपने संस्कारों को अधिक संजोए हुए हैं। हमारे गुरु भगवंतों को भी इस पर पहल करनी चाहिए कि युवाओं को धर्म और समाज से जोड़े रख सकें, युवा जुड़ेंगे तो ही भविष्य में हमारा धर्म और समाज सुरक्षित रहेगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम एक ही रहना चाहिए, आचार्य विद्यासागर जी ने कहा है कि 'इंडिया छोड़ो-भारत बोलो', अतः अपने देश का नाम एक ही रहना चाहिए 'भारत', चाहे हिंदी में कहो या अंग्रेजी में BHARAT ही हमारी पहचान बने।

पवन जी का परिवार कई पीढ़ियों से उत्तर प्रदेश के 'आगरा' में बसा हुआ है। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा 'आगरा' में ही संपन्न हुई है, यहां आप सिल्वर ओर्नामेंट्स होलसेल व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। श्री दिगम्बर जैन शिक्षा समिति आगरा के कार्यकारिणी सदस्य हैं। आगरा के मोती कटरा में स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के अध्यक्ष के रूप में सेवारत हैं, साथ ही अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। भारतीय जैन संगठना आगरा के कोषाध्यक्ष के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत!

बच्छराज चोरडिया
व्यवसाई व समाजसेवी
उदासर निवासी-असम प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३५१८८४९०

बच्छराज जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि जैन समाज में एकता की नितांत आवश्यकता है, समाज में एकता ना होने से आज हमारा अस्तित्व नहीं के बराबर है, इसीलिए समाज की एकता बहुत जरूरी है और इसके लिए सभी पंथों के गुरु-भगवंतों को एक साथ-एक मंच पर आना होगा, क्योंकि श्रावकों में कोई अंतर नहीं दिखाई देता, उनको पहचान कर कोई नहीं कह सकता कि यह दिगम्बर है या श्वेताम्बर। हमारे गुरु भगवंतों को ही देखकर समझा जा सकता है कि वह दिगम्बर समाज से हैं या श्वेताम्बर समाज से इसीलिए 'जैन एकता' के लिए सर्वप्रथम हमारे गुरु भगवंतों को एक साथ-एक मंच पर आना होगा, तभी जैन धर्म एक हो सकता है और इससे हमें सामाजिक महत्व भी प्राप्त होगा, इसीलिए 'जैन एकता' ज़रूरी है।

आज का युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से जुड़ा भी है और नहीं भी, जो जुड़े हैं वह पूरे तन-मन से जुड़े हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम एक ही होना चाहिए 'भारत'। भारत नाम ही हमें हमारी संस्कृति और इतिहास से जोड़े रखता है।

बच्छराज जी मूलतः राजस्थान के बीकानेर जिले में स्थित 'उदासर' के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा 'उदासर' में ही संपन्न हुई है। असम में आप राइस मिल कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। पूर्वोत्तर प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन के कोषाध्यक्ष रहे हैं, अन्य कई संस्थाओं में भी सक्रिय हैं। जय भारत!

ललेश कुमार कांकरिया जैन
पूर्व अध्यक्ष राजस्थान यूथ असोसिएशन
जोधपुर निवासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४४४०७०२५०

ललेश जी 'जैन एकता' के विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि समाज में एकता की बहुत बड़ी आवश्यकता है, क्योंकि हमने अलग-अलग गच्छ बना रखे हैं। आज हमारा समाज कई पंथों में बंटा हुआ है, जैन समाज में जब तक एकता स्थापित नहीं होगी तब तक विशाल स्तर पर हम कोई भी कार्य सफल नहीं कर सकते और इसके लिए सर्वप्रथम हमारे गुरु भगवंतों को प्रयास करना चाहिए। आज हमारे गुरु भगवान मंदिर बनाने के लिए विशेष जोर देते हैं पर हमें सामाजिक कार्यों व स्कूल कॉलेजों, स्वास्थ्य संस्थानों के निर्माण पर जोर देना चाहिए। यदि संपूर्ण जैन समाज एक हो जाए तो भारत में इससे बड़ा समाज अन्य कोई नहीं हो सकता। इस वर्ष चेन्नई श्री जैन महासंघ द्वारा दीपावली पर्व के उपलक्ष में जरूरतमंद जैन भाइयों को मुफ्त राशन वस्त्र व मेडिकल सुविधाएं प्रदान की गई थी जो अपने आप में एक मिसाल है। अतः समाज में एकता होनी बहुत जरूरी है।

पिछले ५ सालों में देखा गया है कि समाज के युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से अधिक जुड़ रहे हैं, विशेषकर दीक्षा की दिशा में देखा जाए तो कई युवक-युवतियों ने दीक्षा प्राप्त की है, जो उच्च शिक्षित व उच्च घराने के हैं। आज के युवक-युवतियां अपने धर्म और समाज को आगे बढ़ाने में विशेष सहायता प्रदान कर रहे हैं जो एक बहुत ही अच्छी पहल है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि यह बहुत ही अच्छा अभियान है और इसका मैं पूर्ण समर्थन करता हूं कि अपने देश की पहचान सिर्फ 'भारत' से ही रहे, अंग्रेज चले गए और उन्होंने इंडिया नाम छोड़ दिया जिससे हमारा कोई वास्ता नहीं है, हमारी पहचान भारत से है और 'भारत' से ही रहनी चाहिए।

ललेश जी मूलतः राजस्थान स्थित जोधपुर के निवासी हैं। आप कई वर्षों से चेन्नई में प्रवासित है और फाइनेंस व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही आप कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हैं। एसएस जैन संघ चेन्नई के सचिव, राजस्थान यूथ एसोसिएशन के अध्यक्ष, दक्षिण भारतीय स्वाध्याय संघ के उपाध्यक्ष व जोधपुर एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे हैं, कई शिक्षण विभागों में कोषाध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं एवं संचालन समिति के अध्यक्ष रहे हैं, मेडिकल रिलीफ सोसायटी के कार्यकारिणी सदस्य हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

तिलक जैन
अध्यक्ष रानीला अतिशय क्षेत्र चरखी दादरी हरियाणा
श्री १००८ भगवान आदिनाथ दिगम्बर जैन चैरिटेबल ट्रस्ट
भ्रमणध्वनि: ९८१२०२००९२

तिलक जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि जैन समाज में एकता होनी बहुत जरूरी है। एकता ना होने के कारण ही आज हमारे अस्तित्व नहीं के बराबर है, हम बिखरे हुए हैं, यदि जैन समाज एक हो जाए तो इससे बड़ा और समृद्ध समाज और कोई नहीं हो सकता, इसके लिए सब अपनी-अपनी तरफ से प्रयास भी कर रहे हैं, हमारे जितने भी पर्व हैं वह एक साथ एक ही समय पर मनाए जाने चाहिए। महावीर जन्म कल्याणक पर्व के अवसर पर निकाले जाने वाले जुलूस सभी समाजों के एक साथ निकाले जाने चाहिए जिससे अन्य समाज को हमारी एकता का संदेश जाता है और इसमें सबसे बड़ी भूमिका हमारे गुरु भगवंतों की है, क्योंकि सभी श्रावक अपने गुरु के अनुयाई होते हैं और यदि गुरु चाहे तो अवश्य 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है, उन्हें एक साथ-एक मंच पर स्थापित होकर इसके लिए आह्वान करना होगा। चातुर्मास के दौरान सभी के कार्यक्रम अलग-अलग होते हैं लेकिन एक दिन ऐसा निर्धारित किया जाना चाहिए, जिसमें सभी गुरु-भगवंत एक साथ उपस्थित हो और अपने विचार प्रस्तुत करें, तभी 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है।

आज का युवा वर्ग अपने धर्म व समाज से विमुख भी हो रहा है और जुड़ भी रहे हैं। चातुर्मास के दौरान होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में यह देखा गया है कि युवा वर्ग की भागीदारी सबसे अधिक रही है, साथ ही युवाओं को अपने धर्म व समाज से जोड़ने के लिए उनकी शिक्षा प्रणाली व पाठ्यक्रम में एक विशेष धर्म प्रधान भी होने चाहिए जिसे युवाओं को अपने धर्म और समाज की जानकारी हो, जिससे युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से जुड़े। 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना कि १००% अपने देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए क्योंकि 'भारत' ही हमारी संस्कृति व संस्कारों से जुड़ा हुआ है।

तिलक जी हरियाणा स्थित चरखी दादरी के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। यहां कंक्रीट पाइप निर्माण उद्योग से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में विशेष सक्रिय रहते हैं। १००८ भगवान आदिनाथ दिगम्बर जैन चैरिटेबल ट्रस्ट के उपाध्यक्ष के रूप में सेवारत हैं। जनता पीजी कॉलेज के अध्यक्ष रहे हैं, चरखी में स्थित एमबीए कॉलेज से जुड़े है। लघु उद्योग भारती के जिला अध्यक्ष के रूप में पिछले १५ वर्षों से सेवारत है, अन्य कई संस्था से भी जुड़े हैं।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

स्वदेश जैन
अध्यक्ष, जैन मित्र संगम दिल्ली
हरियाणा निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८११६४४२१६

स्वदेश जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि जैन समाज में एकता आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है, सब प्रयास करें तो सफल भी हो सकते हैं, इसके लिए सही दिशा में कदम उठाया जाए, क्योंकि प्रयास हमेशा ही सकारात्मक होने चाहिए, पर जैन समाज में एकता की संभावना कम ही दिखाई दे रही है क्योंकि यह कार्य समाज के गुरु-भगवंतों के दिशा निर्देशन में ही संभव हो सकते हैं, यदि वे चाहे तो अवश्य 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है, तो सर्वप्रथम हमारे समाज के गुरु-भगवंतों को एक साथ-एक मंच पर स्थापित होना होगा, तभी 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है। सभी संप्रदाय जैन आगम को ही मानते हैं, सभी संप्रदायों व पंथों के गुरू भगवंत तीर्थंकर महावीर के ही अनुयायी हैं, अतः एकता अवश्य स्थापित होनी चाहिए, क्योंकि एकता में ही हमारे समाज का भविष्य निहित है।

आज का युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से विमुख होता दिखाई देता है वह जुड़ना चाहता है, पर समाज के वरिष्ठजनों द्वारा उन्हें मौका नहीं प्रदान किया जा रहा, उन्हें सही मौका व दिशा निर्देश प्राप्त हो तो युवा भी अपने धर्म और समाज से जुड़े रहेंगे।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम एक ही होना चाहिए, दिगम्बर आचार्य विद्यासागर जी और ज्ञानमती माताजी भी इसी दिशा में प्रयास कर रहे हैं कि अपने देश की पहचान एक ही नाम से हो और वह हो भारत, जो तीर्थंकर ऋषभदेव के जेष्ठ पुत्र भरत के नाम से जाना जाता रहा है। अतः अपने देश का एक ही नाम होना चाहिए 'भारत'।

स्वदेश जी मूलतः हरियाणा के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा दिल्ली में संपन्न हुई है। यहां आप मंच संचालक व जीवन बीमा सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही सामाजिक व धार्मिक कार्यों में भी बढ़-चढ़कर सहभागी होते हैं। महावीर इंटरनेशनल के आजीवन सदस्य हैं, दिल्ली स्थित जैन मित्र संगम के अध्यक्ष, सोनीपत स्थित अनेकांत धाम के उपाध्यक्ष, उत्तरी पीतमपुरा दिल्ली स्थित दिगम्बर जैन समाज के महामंत्री के रूप में सेवारत हैं। अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

ललित कटारिया
जिला अध्यक्ष एंटी करप्शन
सेवाज निवासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४४४२४६२८५

ललित जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि जैन धर्म का मूल सिद्धांत है 'अहिंसा परमो धर्मः' जो कि हर प्राणी मात्र अपनाता है, जहां कोई भेदभाव नहीं है पर आज हमारा जैन समाज कई पंथ में बटा हुआ है, पर सभी के मूल में तीर्थंकर महावीर और उनके सिद्धांत ही हैं। सबका लक्ष्य एक ही है, अतः समाज को एक साथ-एक मंच पर आना होगा। पंथों के बड़ा होने के कारण हमारे समाज का महत्व क्षीण होते जा रहा है, यदि इसी तरह रहा तो एक न एक दिन समाज का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा, अतः समाज को एक साथ-एक मंच पर आना अत्यंत आवश्यक है, इसके लिए सभी गुरु भगवंतों को एक साथ-एक मंच पर उपस्थित होकर, इस दिशा में प्रयास करना चाहिए।

आज का युवा वर्ग ५० से ६०% लोग अपने धर्म और समाज से जुड़े हैं और जो भटके हुए हैं उन्हें जोड़ने की आवश्यकता है, क्योंकि अपने धर्म की रक्षा हमारी भावी पीढ़ी ही कर सकती है, अतः उन्हें धर्म व समाज से जोड़ कर हम उन्हें धर्म व समाज का महत्व बता सकते हैं, अतः युवाओं को जोड़ना अत्यंत आवश्यक है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए, हमारे पुराणों व शास्त्रों में भी इस देश को भारतवर्ष के नाम से संबोधित किया गया है, अतः हमारी देश की वास्तविक पहचान भारत से है और भारत ही रहनी चाहिए। आज लोगों में इस बारे में जागृति भी आ रही है और हमारे राजनेता भी हमारे देश को 'भारत' नाम से ही संबोधित कर रहे हैं।

ललित जी मूलतः राजस्थान के पाली जिले में स्थित 'सेवाज' के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा चेन्नई में संपन्न हुयी है। यहां आप केमिकल व अन्य व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। राजस्थानी एसोसिएशन तमिलनाडु के कार्यकारिणी सदस्य हैं। एंटी करप्शन कमिटी एनजीओ के भी जिला अध्यक्ष हैं, यहां के बालिका विद्यालय एसएस महिला संघ के कोषाध्यक्ष के रूप में भी अपने भूमिका निभा रहे हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
आइये हम सब मिलकर इसकी शुरूआत करें

पुखराज बडोला

उपाध्यक्ष जैन विश्व भारती लाडनूं
ब्यावर निवासी-चेन्नई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४४०७६७३७

पुखराज जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं की समाज में एकता होना बहुत जरूरी है, तभी हम दूसरे समाज के सम्मुख अपने महत्व को प्रस्तुत कर सकते हैं और इसके लिए हमारे सभी पर्व एक साथ एक ही रूप में मनाया जाने चाहिए, जिसके लिए आचार्य श्री महाश्रमण जी ने भी प्रयास किया है। आचार्य श्री शिव मुनि व रामलाल जी म.सा. की सहमति से आने वाले २५ वर्षों तक 'संवत्सरी' एक साथ-एक ही रूप में मनाया जाएगा। एकता स्थापित होने से हमारा सामाजिक वातावरण भी सुदृढ़ होगा। अतः समाज में एकता होना अत्यंत आवश्यक है।

आज का युवा वर्ग अपने धर्म समाज से जुड़ रहा है, उनके धार्मिक कार्य व गुरु भगवन के प्रति आस्था बढ़ती जा रही है, वह दर्शन व सेवा का लाभ के लिए सदैव तत्पर रहते हैं, बस उनका उचित मार्गदर्शन अत्यंत जरूरी है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है की अवश्य ही अपने देश की पहचान भारत से ही रहनी चाहिए, इंडिया नाम अंग्रेजों द्वारा थोपा गया है। हमारे देश सम्राट भरत की भूमि है 'भारत' उन्हीं के नाम से इस देश का नाम 'भारत' रखा गया है, अतः अपने देश का गौरवशाली इतिहास भारत से ही है और नाम भी भारत ही रहना चाहिए।

पुखराज जी मूलतः राजस्थान स्थित ब्यावर के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा 'ब्यावर' में ही संपन्न हुयी है, पिछले २५ वर्षों से आप चेन्नई में बसे हुए हैं, वह बुलियन व ज्वैलरी के व्यवसाय से जुड़े हैं। जैन विश्व भारती लाडनूं के २०१६-१८ में चीफ ट्रस्टी रहे है। २०१८-२० में साहित्य विभाग के अध्यक्ष रहे हैं। वर्तमान में जैन विश्व भारती लाड़नूं के उपाध्यक्ष पद पर अपनी भूमिका निभा रहे हैं, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा चेन्नई के भी अध्यक्ष रहे हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

सुनील जैन

व्यवसाई व समाजसेवी
सुजानगढ़ निवासी-बंगाईगांव प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९१०१६५५५६३

सुनील जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि एकता तो हर समाज की जरूरत होती है पर जैन समाज में इतने पंथ और पंथवाद हैं कि एकता संभव नहीं है, इसके लिए सर्वप्रथम हमारे समाज के धर्म गुरुओं व वह सभी संस्थाओं के प्रधान को एक साथ-एक मंच पर आकर इस पर विचार विमर्श करने की आवश्यकता है, तभी 'जैन एकता' संभव हो सकती है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म समाज से विमुख होती जा रही है और इसका कारण उनकी आधुनिक जीवनशैली, उनके पास अपने धर्म और समाज के लिए समय ही नहीं है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए। 'भारत' नाम ही हमारे देश की प्राचीनतम पहचान है। इंडिया नाम तो अंग्रेजों द्वारा थोपा गया है, जिसका कोई अर्थ नहीं, हमारी पहचान 'भारत' से है और 'भारत' से ही रहनी चाहिए।

सुनील जी मूलतः राजस्थान स्थित 'सुजानगढ़' के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा 'सुजानगढ़' में ही संपन्न हुई है। पिछले २५ वर्षों से आप असम के बंगाईगांव में बसे हुए हैं और यहां हार्डवेयर व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। पूर्व में श्री दिगम्बर जैन नवयुवक मंडल के सचिव रहे हैं। लायंस क्लब व मारवाड़ी युवा मंच से भी जुड़े हैं, साथ ही अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

नेमीचंद जैन

व्यवसायी व समाजसेवी
हरियाणा निवासी-उड़ीसा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३७०७०२१६

नेमीचंद जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि जैन समाज में तो एकता होनी ही चाहिए। आज हमारी संख्या वैसे ही कम है उस पर भी हम पंथों व संप्रदायों में बंटे हुए हैं, जिसके कारण हमारी वास्तविक संख्या नहीं मिल पा रही है, जिससे हमें कमजोर समाज के रूप में जाना जाता है। अपने धर्म व समाज के महत्व को बढ़ाने के लिए समाज में एकता होनी जरूरी है, क्योंकि एकता में बड़ी ताकत होती है, हर असंभव कार्य एकता के साथ किया जाए तो अवश्य समाज को सफलता मिलेगी और समाज आगे बढ़ेगा।

एकता ना होने से आज हमारे समाज को कई दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है और हमें सरकारी महत्व भी नहीं मिल रहा, इसलिए समाज की एकता बहुत जरूरी है।

आज का युवा वर्ग धर्म व समाज से कुछ जुड़ा भी है और कुछ भटक गया है, उन्हें सही मार्गदर्शन देने की आवश्यकता है **शेष पृष्ठ ३४ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ ३३ से... और यह तभी संभव हो सकता है जब हमारा समाज एक साथ-एक मंच पर उपस्थित होगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है की अवश्य ही अपने देश की पहचान सिर्फ 'भारत' से ही रहनी चाहिए, 'भारत' ही हमारे देश का मूल नाम है।

नेमीचंद जी मूलतः हरियाणा स्थित उमरा के निवासी हैं, आपका परिवार लगभग १०० वर्षों से उड़ीसा स्थित कालाहंडी के रिसिडा में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा उड़ीसा में ही संपन्न हुई है, यहां आप किराना व पेट्रोल पंप के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही तेरापंथ सभा उड़ीसा से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

पियूष कुमार जैन

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर सोशल ग्रुप फडरेशन

शाजापुर निवासी-इंदौर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९४२५४००१२१

पियूष जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं की एकता स्थापित करने के लिए हमें हमारे गुरु भगवन से निवेदन करना होगा की वे अपने श्रावकों को एकता स्थापित करने के लिए प्रेरित करें, हम सभी इतने विचारधाराओं में बंटे हुए हैं और हमारे गुरु भगवंत भी अलग-अलग मार्ग प्रेषित करते हैं, हम तो उन्हीं का अनुसरण करते हैं तो 'जैन एकता' स्थापित कैसे हो सकती है। हमारी संवत्सरी भी एक नहीं हो रही तो हम एकता कैसे स्थापित कर सकते हैं, अतः अपने धर्म और समाज के महत्व को बनाए रखने के लिए समाज में एकता होना बहुत जरूरी है।

आज का युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से जुड़ रहा है बस उन्हें चाहिए आडंबर रहित समाज, जो हमारे समाज के वरिष्ठजनों और गुरु भगवंतों द्वारा ही संभव हो सकता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है की अवश्य ही अपने देश की पहचान 'भारत' से ही रहनी चाहिए, इसमें कोई दो राय नहीं।

पियूष जी मूलतः मध्य प्रदेश स्थित शाजापुर के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई। यहां आप व्यवसाय के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय हैं। ओसवाल स्थानकवासी जैन समाज इंदौर के वरिष्ठ उपाध्यक्ष के रूप में अपनी भूमिकाएं निभा रहे हैं। अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर सोशल ग्रुप फडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे हैं, स्थानीय समिती जैन श्वेताम्बर सोशल ग्रुप फडरेशन के अध्यक्ष, प्राच्य विद्यापीठ शाजापुर के सहसचिव, अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली के मार्गदर्शक व डॉ. सागरमल जैन शिक्षण न्यास के ट्रस्टी के रूप में कार्यरत है। साथ ही अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

विनोद बेगवानी जैन

मंत्री तेरापंथ समाज रांची

सादुलपुर निवासी-रांची प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ७९११३३९९३

विनोद जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि 'जैन एकता' कैसे स्थापित हो सकते हैं जबकि आज हमारा संपूर्ण समाज बिखरा हुआ है, जिसमें कई पंथ बने हुए हैं और पंथों में एकता नहीं है, इसके लिए हमारे तेरापंथ आचार्य तुलसी जी ने भी प्रयास किया ताकि हमारी 'संवत्सरी' एक साथ-एक ही रूप में मनाई जाए, इसमें कुछ आचार्यों ने अपनी सहमति जताई भी है। जैन समाज में एकता के लिए सर्वप्रथम हमारे गुरु भगवंतों को एक साथ-एक मंच पर आना होगा, यदि ऐसा न हुआ तो अन्य समाज के सम्मुख हम जैन की परिभाषा नहीं व्यक्त कर पाएंगे, हमारा जो महत्व है वह खोता जा रहा है, एकता ना होने से ही हम आगे भी नहीं बढ़ पा रहे हैं, इसीलिए समाज में एकता होनी बहुत जरूरी है और यह हमारे गुरु भगवंतों द्वारा ही संभव हो सकता है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से विमुख होती दिखाई दे रही है उन्हें जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है तेरापंथ के आचार्य महाश्रमण जी के प्रयासों का ही प्रतिफल है कि आज तेरापंथ युवक मंडल सामाजिक व धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़कर सहभागी होता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, इंडिया नाम तो ब्रिटिश शासन काल में थोपा गया था। ब्रिटिशों द्वारा थोपा गया नाम INDIA हमारी पहचान कैसे बन सकती है, हमारी पहचान भारत से है और भारत से ही रहनी चाहिए।

विनोद जी मूलतः राजस्थान स्थित चुरू जिले के सादुलपुर के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले कई वर्षों से आप रांची में बसे हुए हैं और व्यवसाय के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्रों में भी सक्रिय हैं। रांची तेरापंथ समाज के मंत्री पद पर सेवारत हैं। मारवाड़ी सहायक समिति व प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के आजीवन सदस्य हैं। फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया व्यापार मंडल के झारखंड मीडिया प्रभारी के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही और भी कई संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। जय भारत!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!!

लड़कियों के साथ लड़कों को भी पढाना जरूरी है

डॉ. विमल जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि आज जैन समाज में एकता की बहुत जरूरत है और इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जाता है कि सन २०११ में हुई जनगणना में संपूर्ण जैन समाज की आबादी लगभग ४५ लाख के आसपास रही जो सही नहीं है। वास्तव में हमारी आबादी लगभग सवा करोड़ के आसपास है। हमें भारत सरकार द्वारा २७ जनवरी २०१४ को अल्पसंख्यक का दर्जा दिया गया। प्रत्येक वर्ष भारत सरकार अल्पसंख्यकों के हितार्थ बजट में करोड़ों रुपए का प्रावधान रखती है और बजट का आवंटन अल्पसंख्यक समुदाय यथा मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, पारसी तथा अब जैन में उनकी जनसंख्या के आधार पर आवंटित किया जाता है क्योंकि जनसंख्या में जैन समाज अल्पसंख्यक या यह कहें कि जैन समाज सूक्ष्म अल्पसंख्यक है क्योंकि भारत की कुल आबादी का मात्र ०.३७% ही है। इसलिए टोटल आवंटित बजट में, जैन समाज को मात्र १.९२ प्रतिशत ही प्राप्त होता है जो हमारी वास्तविक जनसंख्या के हिसाब से बहुत कम है, इसलिए भी हमारी समाज को छात्रवृत्ति सभी को ने मिलकर, उसे मेरिट के आधार पर मिलती है, इसी तरह एम.एस.एम.ई. में भारत सरकार ने करोड़ का प्रावधान रखा है कि समाज के व्यापारी वर्ग, उद्योगपति इसमें आवेदन कर अपने व्यापार को उन्नत करें, लेकिन जानकारी के अभाव में जैन समाज, सरकार द्वारा प्रदाय सुविधाओं का लाभ प्राप्त नहीं कर पाता, जबकि जैन समाज ही एक ऐसा समाज है जिसमें ९४% लोग पढ़े लिखे हैं पर जानकारी के अभाव में हमें जो कुछ भी हमें मिलना चाहिए वह नहीं मिल पा रहा, यदि सरकार द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का लाभ हम नहीं लेंगे तो सरकार यही समझेगी कि जैन समाज एक पैसे वाला समाज है और इसको सरकारी सहायता की जरूरत नहीं है अतः आपके हिस्से में आवंटित फंड, दूसरी अन्य समाज को चला जाएगा, अब आप ही बताइए कि इतना पढ़ा-लिखा समाज यदि अपने अधिकारों को ही नहीं समझ पाती तो उस समाज को हम क्या कहेंगे?

सवाई सिंघई डॉ. विमल कुमार जैन
M.Com.,LLB. MD (AM)
प्रांतीय अध्यक्ष, भारतीय जैन संगठन,
जबलपुर, मध्य प्रदेश ईस्ट, भारत
भ्रमणध्वनि: ८७७०४९०९२६

दूसरा प्रमुख कारण है आज हमारा परिवार एकल परिवार बनता जा रहा है आज माता-पिता मात्र एक संतान के जन्म से ही खुश है, इस प्रकार जैन समाज की जनसंख्या निरंतर घटती जा रही है और आने वाले कुछ सालों में हमारी जनसंख्या शायद उंगलियों पर गिनने लायक ही रह पाएगी, यदि हम अपने समाज को बचाना चाहते हैं तो हर एक परिवार में कम से कम ३ बच्चे अवश्य होने चाहिए तभी तो हमें हमारे बेटे के लिए बहू और बेटी के लिए दामाद मिल सकेगा, हमारे समाज की जनसंख्या कम होने की एक वजह अंतर्जातीय विवाह है। हमारी पढ़ी-लिखी बेटियां दूसरे समाज में जा रही हैं, पंच परमेष्ठी कुल का त्याग कर रही हैं। हम बेटियों को तो बहुत ऊंची पढ़ाई कराते हैं, इंजीनियर, एमबीए, डॉक्टर लेकिन लड़कों को हम केवल अपने व्यवसाय चलाने लायक ही पढ़ाते हैं बीए. बीकॉम. तो आप यह बताइए कि एक टेक्निकल एजुकेटेड लड़की ऐसे व्यवसाई वर्ग के लड़के के साथ शादी क्यों करेगी? तो क्या हम अपनी बेटियों को दूसरी समाज में भेजने के लिए पढ़ा रहे हैं। मेरा आपसे कहना है कि बेटों को भी वैसा ही पढ़ायें है ताकि मैच मेकिंग बन सके, यदि समय रहते हम नहीं जागे तो जैन समाज विलुप्त होता नजर आएगा।

हमारे गुरु भगवंतों से यही अनुरोध है कि अपने चातुर्मास के कार्यक्रमों में धर्म प्रभावना के साथ ही साथ समाजिकता एवं शिक्षा के संदर्भ में युवाओं को जोड़ने का प्रयास करें। समाज को शिक्षा के क्षेत्र में शानदार ब्रांडेड स्कूल खोलना चाहिए ताकि हम अपने जैन समाज के युवाओं को भी नैतिक शिक्षा जैन धर्म के आधार पर दे सकेंगे, तभी तो हम अपने जिनालय, देवालय, तीर्थ क्षेत्र सुरक्षित रख सकेंगे, जैन समाज अपनी आर्थिक समृद्धि का उपयोग नॉन वर्किंग कैपिटल के स्थान पर आज समाज के जरूरतमंदों के बीच मदद के रूप में देने के लिए करना चाहिए। अतः इस संदर्भ में हमारे समाज श्रेष्ठी एवं गुरु-भगवंतों को इस विषय पर चिंतन कर, समाज की विसंगतियों को दूर करना निवेदित है। यदि हमने अपनी रोटी (शुद्ध भोजन, चौका) और बेटी को बचा लिया तो जैन धर्म, मुनि परंपरा, पंचम काल के अंत तक चलती रहेगी।

७९ वर्षीय डॉ. विमल जी वर्तमान में जबलपुर में निवासरत हैं। सवाई सिंघई डॉ विमल कुमार जैन ग्राम तेवरी जिला कटनी के निवासी हैं। आप सेवानिवृत्त प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी हैं। २०१८ में आपको भगवान के माता-पिता बनने का अवसर प्राप्त हुआ है। आप भारतीय जैन संगठन के प्रांतीय अध्यक्ष हैं। दिगम्बर जैन महासमिति जबलपुर के संभागीय अध्यक्ष भी रहे हैं, आप भगवान महावीर दिगम्बर जैन मंदिर आमनपुर, जबलपुर के अध्यक्ष हैं। आप लेखक भी हैं। आपके द्वारा मध्य प्रदेश विद्युत मंडल के विकास के ५० वर्ष पर एक किताब लिखी गई, जिसका उपयोग मध्य प्रदेश विद्युत मंडल पर रिसर्च करने वाले बेटे-बेटियों को इस किताब का सहारा लेना ही पड़ता है। फलस्वरूप २६ जनवरी २००२ को मध्य विद्युत मंडल द्वारा डॉ. विमल जैन को विद्युत मंडल के सर्वोच्च पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आप जीतो (जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन जबलपुर चैप्टर) के आजीवन सदस्य हैं तथा मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्य के अल्पसंख्यक विषय हेतु चीफ कन्वीनर हैं, आपको अनेक संस्थाओं द्वारा अनेक बार सम्मानित किया जा चुका है, उम्र के इस पड़ाव में भी सामाजिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र में पूरी शिद्दत के साथ कार्यरत हैं।

डॉ. विमल जी का यह कहना है कि जैन मतलब 'जैन', चाहे वह दिगम्बर हों, श्वेताम्बर हो, मूर्ति पूजक हों, स्थानकवासी हों या तेरापंथी हों हमें इस कलयुग में संगठित होकर ही रहना पड़ेगा तभी हमारा अस्तित्व बना रहेगा। इकट्ठे रहेंगे तो आप चांद-सूरज बनेंगे, सितारों में बंटोगे तो रोशनी कहां से लाओगे। इसलिए आपका कहना है कि:-

हमारे तीर्थंकर एक हैं, हमारा महामंत्र एक है
हम सब जैन हैं, हम सब भारतीय हैं।
जय जिनेंद्र! जय भारत!

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

ईशान कुमार जैन
व्यवसायी व समाजसेवी
आरा निवासी-पटना प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३३४११२१७८

ईशान जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि जैन समाज को अल्पसंख्यक का दर्ज दिया गया है, हमारी संख्या कम होने के बावजूद हम देश के आर्थिक स्थिति की रीड़ की हड्डी हैं, क्योंकि सबसे ज्यादा टैक्स देने वालों में जैन समाज की ही संख्या है, इसके बावजूद हमें जो महत्व प्रदान होना चाहिए वह नहीं मिल पा रहा, इसका कारण हमारे समाज में एकता व आपसी सामंजस्य का अभाव। एकता का कार्य हमारे समाज के धर्मगुरु व महाराज सा. के हाथों ही संभव है, क्योंकि वे अपने प्रवचनों में इतने आशीर्वचन प्रदान करते हैं, उन्हें इस विषय पर भी संदेश देना चाहिए की कैसे एकता स्थापित हो सकती है और इसके लिए एक साथ-एक मंच पर आना होगा, कुछ बातें मंच तक ही सीमित रह जाती हैं, उसका वास्तविक जीवन में उपयोग नहीं किया जाता तो 'जैन एकता' कैसे स्थापित हो सकती है, अपने धर्म व समाज के महत्व को बनाए रखने के लिए समाज में एकता होनी बहुत जरूरी है।

आज का युवा वर्ग पहले की अपेक्षा धर्म व समाज से अधिक जुड़ा हुआ है पर वह धर्म के लिए नहीं टूरिज्म के लिए अधिक सक्रिय है। जैन तीर्थ में युवाओं की संख्या अधिक देखने को मिलती है पर वह धर्म के लिए नहीं बल्कि पर्यटन की दृष्टि से जाते हैं क्योंकि जैन धर्म, सरल धर्म नहीं है इसमें कई विधि-विधान हैं, जिसे अपनाना आज के युवा वर्ग को कठिन लगता है, अतः इनमें संशोधन करने की आवश्यकता है, जिससे युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से जुड़ सके।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में अब अपना मत व्यक्त करते हुए कहते हैं कि अवश्य ही अपने देश की पहचान 'भारत' नाम से ही होनी चाहिए। आचार्य श्री विद्यासागर जी व वर्तमान मोदी सरकार द्वारा इसका विशेष प्रचार-प्रसार किया जा रहा है, आने वाले कुछ सालों में यह पूर्णतया संभव हो सकता है की अपने देश की पहचान सिर्फ 'भारत' से ही हो।

ईशान जी मूलतः बिहार के आरा के निवासी हैं। आपका जन्म आरा में व संपूर्ण शिक्षा कोलकाता में संपन्न हुई है। १९८४ से आप बिहार की राजधानी पटना में बसे हुए हैं और बिल्डिंग मटेरियल व्यवसाय से संलग्न हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। कांग्रेस मैदान दिगम्बर जैन मंदिर समाज के कार्यकारिणी मंत्री के रूप में सेवारत हैं, साथ ही प्रमाण सागर जी की प्रेरणा से स्थापित शिखर बंद मंदिर के संरक्षक भी हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

भारत दोशी जैन
अध्यक्ष श्री १००८ आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर मुगाली दवरलीम, गोवा
फलटण निवासी-गोवा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२२४८५५२५

भारत जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि आदिकाल से हमारा जैन समाज एक हीरा है, तीर्थंकर महावीर के पश्चात ही हमारा समाज कई पंथ व संप्रदायों में विभक्त होता गया। इसका कारण हमारे समाज के धर्मगुरु हैं यदि हमारे समाज के धर्मगुरु चाहें तो अवश्य 'जैन एकता' स्थापित हो सकती हैं, भले ही हमारी पूजा-पद्धति, विधि-विधान अलग-अलग हैं पर सभी के मूल में तीर्थंकर महावीर स्वामी हैं, सभी का लक्ष्य एक ही है अतः 'जैन एकता' अवश्य स्थापित होनी चाहिए और यह आज समाज की सबसे बड़ी जरूरत है। एकता ना होने के कारण ही हमारे समाज का कोई अस्तित्व नहीं रह गया, अन्य समाज के सम्मुख हमारी एकता को बनाए रखने के लिए हमारे गुरु भगवंतों को एक साथ-एक मंच पर आना होगा। गोवा जैन मंडल द्वारा पर्यूषण पर्व एक साथ एक ही समय पर मनाया जाता है जो 'जैन एकता' की दिशा में अहम कदम है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म व समाज से विमुख होते जा रही है इसका कारण है समाज में फैला आडंबर और युवाओं की आधुनिक जीवन शैली, जिसके कारण उनका धर्म समाज के प्रति रुझान कम होते जा रहा है, यदि उन्हें सही दिशा निर्देश प्राप्त हो तो वे अवश्य अपने धर्म और समाज से जुड़े रहेंगे।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि इसमें कोई दो राय नहीं है कि अपने देश की पहचान सिर्फ एक ही नाम से होनी चाहिए और वह रहे 'भारत' जो हमारे प्राचीन काल से चला आ रहा है, 'भारत' नाम में हम भारतीयों को दिक्कत नहीं होनी चाहिए।

भारत जी का परिवार कई वर्षों से 'गोवा' में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'गोवा' में ही संपन्न हुई है। आप का मूल स्थान महाराष्ट्र में 'फलटण' है। गोवा में आप डिस्ट्रीब्यूसन व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में भी अपनी सहभागिता निभाते हैं। गोवा स्थित श्री १००८ आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर मुगाली दवरलीम व उत्तम सुविधाओं से युक्त श्री १००८ शांति सागर अतिथि भवन के अध्यक्ष पद पर सेवारत हैं। जय भारत!

अमित जैन
डायरेक्टर महावीर सेवा सदन
किशनगढ़ निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३३९४६०७११

अमित जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि 'जैन एकता' आज समाज की सबसे बड़ी जरूरत है। जैन समाज की संख्या बहुत ही कम है और हमारा समाज कई पंथों व संप्रदायों में बंटा हुआ है, यदि हम इस तरह पंथों व संप्रदाय में बंटे रहेंगे और बिखरे रहेंगे तो एक दिन हमारा समाज पूरी तरह से नष्ट हो जाएगा। अपने समाज और धर्म की रक्षा हेतु संपूर्ण जैन समाज को एक साथ एक मंच पर आना होगा और इसके लिए हमारे गुरु भगवंतों को विशेष प्रयास करना होगा, तभी 'जैन एकता' संभव हो सकती हैं।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ना चाहती है पर उनका दृष्टिकोण अलग है और उन्हें धर्म समाज से जोड़ने के लिए समाज को उनके दृष्टिकोण के अनुरूप चलना होगा तभी वह धर्म और समाज से जुड़े रहेंगे उनके प्रश्न बहुत होते हैं, उन प्रश्नों का समाधान कर उनको धर्म और समाज से जोड़ा जा सकता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत' इसमें किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए क्योंकि यही हमारा प्राचीन और ऐतिहासिक नाम है।

अमित जी मूलतः राजस्थान स्थित किशनगढ़ के निवासी हैं। आपका परिवार कई पीढ़ियों से भागलपुर में बसा हुआ है। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा कोलकाता में ही संपन्न हुयी है। पिछले कई वर्षों से आप व्यवसाय निमित्त कोलकाता में बसे हुए हैं और ऑप्टिकल व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। महावीर सेवा सदन जो विकलांगों के लिए कार्य करती है, इस संस्था में ३३ सालों से जुड़े हैं, वर्तमान में डायरेक्टर के रूप में सेवारत हैं। लायंस क्लब व अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं।

प्रमोद चंद बोथरा
व्यवसाई व समाजसेवी
मुर्शिदाबाद निवासी-सुपौल प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९३९९००८२५

प्रमोद जी जैन एकता के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि आज समाज में एकता की बहुत जरूरत है और यह तभी संभव हो सकता है जब सभी अपने नाम के आगे 'जैन' शब्द अवश्य लिखें तभी हमारी वास्तविक संख्या का पता चल सकता है और ऐसा न करने पर अन्य समाज को पता ही नहीं चलता कि हम किस समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। अपने धर्म व समाज को महत्व प्रदान करने के लिए समाज में एकता लाना बहुत जरूरी है। एकता ना होने से ही हमें सरकारी महत्व व लाभ भी नहीं प्राप्त हो रहे हैं अतः आने वाली जनगणना में अपने नाम के साथ 'जैन' शब्द अवश्य लिखें, तभी हमारी वास्तविक संख्या का पता चलेगा और हमें महत्व प्राप्त होगा।

आज की युवा पीढ़ी अपने समाज व संस्कृति को नहीं अपना रही है और इसके जिम्मेदार माता-पिता ही है क्योंकि वह बच्चों को मंदिर नहीं ले जाते, देरासर नहीं ले जाते, उन्हें धर्म-ध्यान की बातें नहीं बताते तो बच्चे अपने धर्म और समाज से कैसे जुड़ेंगे।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' इस संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य अपने देश की पहचान 'भारत' से ही होनी चाहिए क्योंकि यह नाम हमारे देश के गौरवशाली इतिहास को दर्शाता है। अत: इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूँ।

किशन जी मूलतः राजस्थान के निवासी हैं पर आप का परिवार पीढ़ियों से पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में स्थित अजीमगंज का निवासी हैं, जो पिछले चार पीढ़ियों से बिहार के सुपौल में बसा हुआ है।आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई। यहां आप बिल्डिंग मटेरियल व्यवसाय से जुड़े हैं। साथ ही तेरापंथ समाज के विभिन्न संस्थाओं में सक्रिय हैं।

जैन एकता' से ही जैन समाज का विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
Nemi Chand Jain
Mob: 94370 70216
Jain Fuel Centre
Risida, Kalahandi, Odisa, Bharat-766031

करते हैं प्रीत भारत से! कहेंगे देश को केवल भारत
आप भी बोलें 'भारत' को केवल BHARAT
INDIA नाम तो गुलामी का प्रतीक है
जैन एकता' से ही जैन समाज का विकास व सम्मान बढ़ेगा
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
Pukhraj Badola
Mob: 94440 76737
124/A "Aadinath Complex," 1st Floor
N.S.C.Bose Road, Chennai- 600 079

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Issue Opens : 01-09-2021
Issue Closes : 03-09-2021
Price Band : 603 – 610
Market Lot : 24 Shares & in Multiples

AMI ORGANICS LIMITED

Total Issue Size: ~ Rs 670 Crores
a) Pre IPO : ~ Rs 100 Crores
b) Anchor : ~ Rs 170 Crores
c) Main Book : ~Rs 400 Crores*

THANK YOU INVESTORS FOR OVERWHELMING RESPONSE

IPO SUBSCRIBED 64.54 TIMES*

TOTAL BID RECEIVED : ~ Rs. 25,733 Crores* (@ Upper Band)

* Excluding Pre IPO & Anchor Investors of Rs. 270.89 Crores

QIB	HNI	RETAIL
86.02 TIMES	155.40 TIMES	13.32 TIMES

as per www.bseiindia.com and www.nseindia.com dt. 3rd Sept, 21 @ 5 pm

Intensive
Investment Banking & Corporate Finance
www. intensivefiscal.com

पधारो म्हारे देश

मेरा राजस्थान

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

राजस्थान का इतिहास
पहुँचाए आपके हाथ

मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

पंजीकृत कार्यालय
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
'मेरा राजस्थान'
पत्रिका मुफ्त

वार्षिक शुल्क १,१११/-
आजीवन शुल्क ११,१११/-

Postal Registration Number - MCN/192/2021-2023
WPP License No. MR/Tech/WPP-319/North/2021-23
'License to post without prepayment'
Published on 09th November 2022 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

ADD Gel®

ACHIEVER®

THE WORLD'S FINEST GEL PEN

Non Dry
NOW...UPTO 2 YEARS

ONLY ₹50/- PER PC

LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY

Presenting New ADD Gel Achiever, the world's finest gel pen.With improved dye base ink that stays Non-Dry for up to 2 years.For smoother, effortless writing.

www.addpens.com

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्ज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598